दैनिक
बुद्ध का संदेश
हिन्दी समाचार पत्र
एक विश्वास....

रानी मुखर्जी की बहुप्रतीक्षित फिल्म ...8
बलरामपुर
शुक्रवार, 23 जनवरी 2026
वर्ष: 05 अंक : 111 पृष्ठ: 8
आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, बरेली, सीतापुर, सोनभद्र, गोण्डा, बाराबंकी, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, अम्बेडकरनगर, फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर, गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, महराजगंज, रामपुर, रायबरेली, सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

सम्पादक : राजेश शर्मा

दैनिक बुद्ध का संदेश 8795951917, 9415163471 @budhakasandesh budhakasandeshnews@gmail.com www.budhakasandesh.com

उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

डोडा में भीषण सड़क हादसा, गहरी खाई में गिरा सेना का ट्रक

10 वीर जवानों ने गंवाई जान, 9 घायल

डोडा। जम्मू–कश्मीर के डोडा जिले से एक बहुत ही दुखद समाचार सामने आया है। बृहस्पतिवार को भारतीय सेना का एक वाहन अनियंत्रित होकर गहरी खाई में गिर गया। इस भीषण दुर्घटना में 10 जवानों की मौत हो गई है, जबकि 9 अन्य जवान घायल बताए जा रहे हैं। अधिकारियों के अनुसार, यह हादसा भद्रवाह–चंबा अंतरराज्यीय मार्ग पर खन्नी टॉप के पास हुआ। सेना का वाहन नियमित आवाजाही के दौरान पहाड़ी रास्ते पर अचानक सड़क से फिसल गया और सीधे गहरी खाई में जा गिरा।

एलजी मनोज सिन्हा ने गहरी संवेदना व्यक्त की

एलजी मनोज सिन्हा ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा, ष्डोडा में एक दुर्भाग्यपूर्ण सड़क दुर्घटना में हमारे 10 बहादुर भारतीय सेना के जवानों की जान जाने से गहरा दुख हुआ। हम अपने बहादुर सैनिकों की उत्कृष्ट सेवा और सर्वोच्च बलिदान को हमेशा याद रखेंगे। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं।ष

उन्होंने आगे कहा, ष्इस गहरे दुख की घड़ी में, पूरा देश शोक संतप्त परिवारों के साथ एकजुटता और समर्थन में खड़ा है। 10 घायल जवानों को अस्पताल में एयरलिफ्ट किया गया है। वरिष्ठ अधिकारियों को सर्वोत्तम संभव इलाज सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।ष

देश के लिए बड़ी क्षतिः

दुर्गम क्षेत्रों में देश की रक्षा में तैनात इन वीर जवानों की शहादत पर पूरा देश शोक व्यक्त कर रहा है। शुरुआती रिपोर्टों के अनुसार, खराब मौसम या फिसलन भरे रास्ते को हादसे का कारण माना जा रहा है।

सेना के वाहन में कुल 17 जवान सवार थे

अधिकारियों ने बताया कि बुलेट–प्रूफ सेना का वाहन, जिसमें कुल 17 जवान सवार थे, एक ऊँची पोस्ट की ओर जा रहा था, तभी ड्राइवर ने नियंत्रण खो दिया और वाहन 200 फुट गहरी खाई में गिर गया। सेना और पुलिस द्वारा तुरंत एक संयुक्त बचाव अभियान शुरू किया गया और अधिकारियों ने बताया कि चार जवानों के शव मिले।

नौ जवानों को घायल हालत में बचाया गया

उन्होंने बताया कि नौ अन्य जवानों को घायल हालत में बचाया गया और उनमें से तीन, जिन्हें गंभीर चोटें आई हैं, उन्हें विशेष इलाज के लिए उधमपुर सैन्य अस्पताल में एयरलिफ्ट किया गया।

रूस–यूक्रेन–अमेरिका के बीच बैठक

पुतिन–ट्रंप और जेलेंस्की यूएई में मिलेंगे!

यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने गुरुवार को कहा कि अमेरिका, रूस और यूक्रेन शुक्रवार से संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में त्रिपक्षीय बैठक करेंगे। फरवरी 2022 में यूरोप में शुरू हुए संघर्ष के बाद यह अपनी तरह की पहली बैठक होगी। स्विट्जरलैंड के दावोस में विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) के दौरान बोलते हुए, यूक्रेनी राष्ट्रपति ने कहा कि यह दो दिवसीय बैठक होगी, और उन्होंने हजारों लोगों की जान लेने वाले इस संघर्ष के अंत की उम्मीद जताई। इससे पहले स्विट्जरलैंड के रिजॉर्ट शहर दावोस में विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) के वार्षिक सम्मेलन में हिस्सा लेने के बाद स्वदेश लौटने से पहले ट्रंप ने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल आज या कल पुतिन से मुलाकात करेगा। उन्होंने कहा कि मेरी मुलाकात

राष्ट्रपति जेलेंस्की से यहां हुई। बैठक अच्छी रही। हम (अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल) आज या कल राष्ट्रपति पुतिन से मिलेंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति से जब सवाल किया गया कि पुतिन के लिए उनका क्या संदेश है तो उन्होंने कहा कि युद्ध को समाप्त करना होगा। बहुत से लोग मारे गए हैं। ट्रंप ने डब्ल्यूईएफ की वार्षिक बैठक को संबोधित करते हुए दावा किया था कि वह रूस–यूक्रेन युद्ध को रोकने के लिए एक समझौते के काफी करीब हैं। हालांकि उन्होंने पहले सोचा था कि उनके लिए कुछ ही घंटों में इस पर समझौता करना आसान होगा। ट्रंप चार साल से जारी युद्ध को समाप्त कराने की शर्तों पर जेलेंस्की और पुतिन को सहमत कराने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा था कि अगर पुतिन और जेलेंस्की इस युद्ध को अब खत्म नहीं करते हैं तो वे बेवकूफ होंगे, और वह जानते हैं कि वे ऐसा नहीं हैं। ट्रंप ने रेखांकित किया वह युद्धों को सुलझाने में माहिर हैं, हालांकि यह काम संयुक्त राष्ट्र को करना चाहिए। उन्होंने कहा, यह करना ही होगा। इससे कई जानें बचेंगी, लाखों जानें बचेंगी। यूक्रेन और रूस के बीच, राष्ट्रपति जेलेंस्की और राष्ट्रपति पुतिन के बीच यह घोर नफरत अच्छी बात नहीं है। यह समझौतों के लिए अच्छा नहीं है। ट्रंप ने कहा कि कई बार हमने रूस के साथ करार किया, लेकिन जेलेंस्की सहमत नहीं हुए... यह एक बहुत ही मुश्किल संतुलन है।

राहुल गांधी ने मनरेगा के लिए लोगों से एकजुट होने का आह्वान किया

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम' (मनरेगा) की जगह लाए गए 'विकसित भारत–जी राम जी अधिनियम' को लेकर बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी तथा केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला और लोगों का आह्वान किया कि वे सरकार के इस कदम के खिलाफ एकजुट होकर खड़े हों। उन्होंने कांग्रेस के प्रकोष्ठ रचनात्मक कांग्रेस द्वारा आयोजित कार्यक्रम

मनरेगा बचाओ मोर्चा में यह आरोप भी लगाया कि भाजपा एक ऐसा हिंदुस्तान चाहती है जहां एक राजा सारे फैसले करे। राहुल गांधी ने कहा, मनरेगा की परिकल्पना गरीबों को रोजगार देने के अधिकार का कानून था. .. इसमें लोगों और मजदूरों की आवाज थी। इस योजना ने हर गरीब व्यक्ति को 100 दिनों के रोजगार की गारंटी दी थी।''

उन्होंने कहा कि अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा इसे खत्म करना चाहते हैं। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने निरस्त हो चुके कृषि कानूनों का उल्लेख करते हुए कहा कि किसानों ने दबाव डालकर कानूनों को रद्द करवाया था तथा उन्होंने मजदूरों को रास्ता दिखाया है। राहुल गांधी ने दावा किया कि ये लोग (भाजपा) आधुनिक भारत के ढांचे को खत्म करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, मुझे मालूम है कि ये (भाजपा) डरपोक लोग हैं। अगर हम लोग एक साथ खड़े हो गए तो आप निर्णय लेंगे कि योजना का नाम क्या होगा और यह कैसे चलेगी। उन्होंने कहा कि सरकार के खिलाफ गरीबों को एकजुट होकर खड़ा होना पड़ेगा।

छत्तीसगढ़ की स्टील फैक्ट्री में भीषण विस्फोट

6 मजदूरों की मौत की आशंका, 10 से अधिक घायल

छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार

–भाटापारा जिले से एक भीषण औद्योगिक हादसे की खबर सामने आई है। यहाँ एक स्टील फैक्ट्री की चालू यूनिट में हुए जोरदार धमाके में कम से कम 6 श्रमिकों की मौत की आशंका है, जबकि 10 से अधिक मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। इस घटना ने पूरे इलाके में दहशत फैला दी है और राज्य में औद्योगिक सुरक्षा मानकों पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

कोयला भट्टी में अचानक धमाका हुआः यह धमाका बकुलाही स्थित रियल इस्पात स्टील प्लांट में हुआ, जब एक कोयला भट्टी में अचानक धमाका हो गया और घटना के समय मजदूरों का एक ग्रुप भट्टी के आसपास सफाई का काम कर रहा था।

घायल मजदूरों को पास के अस्पतालों में ले जाया गया

मौके पर मौजूद स्थानीय लोगों ने बताया कि धमाके के बाद गर्म कोयले और आग की लपटों के सीधे संपर्क में आने से पीड़ितों को जानलेवा जलने की चोटें आईं। धमाके के तुरंत बाद घायल मजदूरों को पास के अस्पतालों में ले जाया गया, हालांकि घायलों की सही संख्या की अभी आधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं हुई है। प्लांट मैनेजमेंट ने अभी तक धमाके के कारण या घायल मजदूरों की हालत के बारे में कोई बयान जारी नहीं किया है। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। इसके अलावा, अधिकारी प्लांट में सेफ्टी प्रोटोकॉल और उन परिस्थितियों की जांच कर रहे हैं जिनके कारण भट्टी में धमाका हुआ।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में लापरवाही पर कड़ी कार्रवाई- उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य जी के स्पष्ट निर्देशों के अनुपालन में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के अंतर्गत कार्यों में लापरवाही, अनुबंध शर्तों के उल्लंघन तथा गुणवत्ता मानकों का पालन न किए जाने के मामलों में कड़ी प्रशासनिक कार्रवाई की गई है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना–3 के अंतर्गत एफ.डी.आर. तकनीकी से वित्तीय वर्ष 2021–22 के बैच–02 में जनपद गाजीपुर में स्वीकृत पैकेज संख्या यूपी–29135, यूपी–29137, यूपी–29138, यूपी–29139 एवं यूपी–29140 के मार्गों का अनुबंध सं० 166ध्एसईध्आरईडी–वाराणसीध्2022–23 दिनांक 18.10.2022 द्वारा मैसर्स सिंगला गुप्ता एंड सन्स, 182, आर्यन बाजार, कैंट, प्रयागराज के पक्ष में निष्पादित किया गया था। इसी प्रकार, जनपद प्रयागराज में एफ.डी.आर. तकनीकी से वित्तीय वर्ष 2021–22 के बैच–02 में स्वीकृत पैकेज संख्या यूपी–03217, यूपी–03218 एवं यूपी–03166 के मार्गों का अनुबंध सं० 35ध्एसईध्आरईडी–प्रयागराजध्2022–23 दिनांक 31.08.2022 द्वारा उक्त फर्म के पक्ष में किया गया था। अनुबंधित ठेकेदार द्वारा अनुबंध की शर्तों का पालन न किए जाने, गुणवत्ता एवं समयबद्धता में गंभीर लापरवाही तथा एसबीडी की शर्तोंकृक्लॉज 52.2(), 52.2(म), 52.2(ी), 52.2(प) एवं 52.2(र)कृका उल्लंघन पाए जाने के कारण तथा एसबीडी के क्लॉज 52.3 में वर्णित प्रावधानों के अंतर्गत सक्षम स्तर पर कार्रवाई की गई।

दिल्ली एयरपोर्ट के टर्मिनल 3 पर जांच के दौरान मिला नरकंकाल, पुलिस ने फोरेंसिक जांच के लिए भेजा

दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल 3 पर उस समय अफरा–तफरी मच गई जब सुरक्षाकर्मियों ने नियमित सामान जांच के दौरान एक मानव कंकाल जैसा कुछ पाया, जिससे तत्काल अलर्ट जारी हुआ और हवाई अड्डे को खाली कराया गया। हवाई अड्डे की सुरक्षा और दिल्ली पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने और जांच शुरू करने के लिए तुरंत हस्तक्षेप किया। यात्रियों की बढ़ती चिंता के बीच घटी इस घटना को जल्द ही एक मेडिकल छात्र से संबंधित हानिरहित शैक्षिक उपकरण बताकर खारिज कर दिया गया। सामान्य सुरक्षा जांच के दौरान, टी3 पर एक यात्री के बैग में स्कैनर ने एक संदिग्ध वस्तु को चिह्नित किया, जिससे पता चला कि उसमें मानव हड्डियों से मिलते–जुलते कंकाल के अवशेष थे। पास में मौजूद यात्री तस्करी या इससे भी बदतर किसी घटना के डर से घबरा गए, जिससे

अस्थायी रूप से अफरा–तफरी मच गई और लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की गई। सुरक्षा टीमों ने इलाके को घेर लिया और किसी भी आपराधिक संलिप्तता का पता लगाने के लिए गहन जांच हेतु दिल्ली पुलिस को बुलाया। इस घटना ने दिल्ली के सबसे व्यस्त टर्मिनल जैसे उच्च यातायात वाले केंद्रों में नियमित सतर्कता और जनता के भय के बीच की बेहद नाजुक स्थिति को उजागर किया। पुलिस द्वारा की गई प्रारंभिक जांच में पता चला कि कंकाल एक वास्तविक प्रदर्शन मॉडल था, जिसका उपयोग आमतौर पर मेडिकल छात्र शरीर रचना विज्ञान के प्रशिक्षण के लिए करते हैं। यह कंकाल एक वैध छात्र यात्री के सामान में मिला था।

पुलिस मुख्यालय में महिला कांस्टेबल ने फांसी लगाकर आत्महत्या की

गुजरात के भरूच जिले में पुलिस मुख्यालय स्थित अपने आवास पर 27 वर्षीय एक महिला कांस्टेबल ने कथित तौर पर आत्महत्या कर ली है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि बुधवार रात को हुई इस घटना के बाद एक सुसाइड नोट बरामद किया गया है, जिसकी अभी जांच की जानी है। पुलिस के अनुसार, कांस्टेबल प्रीति परमार (27) ने अपने आवासीय क्वार्टर मेंछत पर लगे पंखे से कथित तौर पर फंदा लगाकर जान दे दी। पुलिस उपाधीक्षक अक्षयराज मकवाना ने कहा कि एक सुसाइड नोट बरामद हुआ है और अभी उसकी जांच की जानी है। परमार के फोन करने संबंधित जानकारी तथा चौट विवरण निकालने के लिए उनका मोबाइल फोन विधि विज्ञान प्रयोगशाला भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि इस मामले में आकस्मिक मृत्यु का मामला दर्ज किया गया है और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सिविल अस्पताल भेजा गया है। जानकारी के मुताबिक, परमार मूल रूप से गुजरात के भावनगर जिले की रहने वाली थीं। भरूच में रहने वाले उनके रिश्तेदारों को घटना के बारे में सूचित कर दिया गया है।

झारखंड में नक्सलियों पर सर्जिकल स्ट्राइक!

चाईबासा मुठभेड़ में 15 नक्सली ढेर, 1 करोड़ का इनामी अनल दा भी मारा गया

रांची। झारखंड के चाईबासा जिले में सुरक्षा बलों ने नक्सलियों के खिलाफ अब तक के सबसे बड़े अभियानों में से एक को अंजाम दिया है। झारखंड पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (ब्च्ब्) की संयुक्त कार्रवाई में 15 नक्सली मारे गए हैं। इस मुठभेड़ की सबसे बड़ी सफलता 1 करोड़ रुपये के इनामी नक्सली अनल दा का खात्मा है। यह मुठभेड़ चाईबासा के घने जंगल इलाके में हुई, जब सुरक्षा बलों ने नक्सलियों की मौजूदगी की खुफिया जानकारी के आधार पर तलाशी अभियान शुरू किया। ऑपरेशन के दौरान, नक्सलियों ने सुरक्षा बलों पर फायरिंग शुरू कर दी, जिसके जवाब में सुरक्षा बलों ने भी भारी जवाबी फायरिंग की। अधिकारियों के अनुसार, गोलीबारी में 15 नक्सली मारे गए। बड़ी मात्रा में हथियार और गोला–बारूद भी बरामद

होने की आशंका है। इलाके में अभी भी तलाशी अभियान जारी है और सुरक्षा बलों ने पूरे क्षेत्र को घेर लिया है ताकि कोई भी नक्सली भाग न सके। सुरक्षा बलों की बड़ी जीतः झारखंड में नक्सलवाद की कमर तोड़ने की दिशा में इसे एक ऐतिहासिक सफलता माना जा रहा है। अनल दा जैसे बड़े कमांडर का मारा जाना नक्सली संगठन के लिए एक अपूरणीय क्षति है। राज्य के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने इस सफल ऑपरेशन के लिए जवानों के साहस की सराहना की है।

घेराबंदी और तलाशी अभियान जारी

अधिकारियों के मुताबिक, मुठभेड़ के बाद पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी गई है। सुरक्षा बलों को अंदेशा है कि कुछ और नक्सली घायल अवस्था में जंगल के भीतर छिपे हो सकते हैं। चाईबासा के इन घने जंगलों में अभी भी सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है ताकि किसी भी नक्सली को भागने का मौका न मिले।

हत्या की कोशिश के मामले में वांछित गिरफ्तार

दिल्ली पुलिस ने हत्या की कोशिश के एक मामले में वांछित अपराधी को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। आरोपी की पहचान पंकज के तौर पर हुई है, जिसे दूसरे दो मामलों में भगोड़ा घोषित किया गया था। उसे उत्तर प्रदेश के हापुड़ में पकड़ा गया। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा, आरोपी 13 अप्रैल, 2024 को जहांगीर पुरी पुलिस थाने में दर्ज हत्या की कोशिश के एक मामले में वांछित था। इस घटना में, पीड़ित पर धारदार हथियारों और लोहे की छड़ से हमला किया गया था जिसके बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अधिकारी ने बताया कि मामला दर्ज होने के बाद से आरोपी फरार था। पुलिस ने बताया कि पंकज का आपराधिक इतिहास है और वह हत्या की कोशिश, चोरी और छीना–झपटी समेत कम से कम पांच मामलों में शामिल रहा है।

स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण आवश्यक -डॉ. देवव्रत

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। प्रदूषण मुक्त हवा तथा पानी और मिट्टी ही हम सभी लोगों को बचाते हैं। साथ ही हमारे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को भी मजबूत बनाते हैं ।स्वच्छ वातावरण रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। त्वचा को स्वस्थ रकहते हुए विभिन्न संक्रमणों से भी हमे बचाता है। उक्त विचार जिला विज्ञान क्लब, सिद्धार्थनगर द्वारा चांद गर्ल्स इंटर कॉलेज टेउवा ग्रांट में स्वच्छ पर्यावरण एवं स्वस्थ जीवन पर वैज्ञानिक जागरूकता कार्यक्रम अवसर पर वतौर मुख्य अतिथि डा देवव्रत राव चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बढ़या ने दी है। उन्होंने कहा कि हम सभी लोगों को अपने स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ पेयजल ग्रहण करना चाहिए ।क्योंकि अशुद्ध जल तमाम बीमारियों का जनक होता है ।स्वच्छ हवा और पानी से स्वास्थ्य संबंधी बीमारियां कम होती हैं। जबकि प्रदूषित पर्यावरण कैंसर, अस्थमा जैसी तमाम समस्याएं पैदा करता है ।अध्यक्षीय संबोधन में तनवीर अहमद खान प्रधानाचार्य चांद गर्ल्स इंटर कॉलेज टेउवा ग्रान्ट ने कहा कि हम सभी लोगों को अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।जिसके लिए नियमित दिनचर्या व संतुलित आहार बहुत आवश्यक है। समय–समय पर हम सभी को अपने शरीर का चिकित्सीय परीक्षण भी कराते रहना चाहिए। स्वस्थ नागरिक ही स्वस्थ व विकसित राष्ट्र के

निर्माण में सहायक हैं ।उन्होंने मुख्य अतिथि को औषधीय पौधे भी भेंट किया। उक्त अवसर पर सेक्सनअधिकारी वन मनीष पांडेय ने कहा कि हम सभी को पर्यावरणीय स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वायु, जल और मृदा प्रदूषण से वैश्विक स्तर पर लाखों मौतें होती हैं। अस्वच्छ पर्यावरण जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा देता है , जिससे गर्मी और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएं व स्वास्थ्य संकट पैदा करती हैं ।हम सभी को पर्यावरण संतुलन बनाए रखने हेतु खाली पड़ी जमीनों पर वृक्षारोपण व रोपित पौधों का संरक्षण करना आवश्यक है। अतिथियों का स्वागत समन्वयक सच्चिदानंद तथा कार्यक्रम का संचालन व धन्यवाद ज्ञापन सिद्धार्थ शंकर ने किया ।कार्यक्रम को वरिष्ठ शिक्षक पंकज मिश्रा , प्रवक्ता वेद प्रकाश शुक्ला, एन एन सिंह, नॉन मेडिकल सुपरवाइजर समेत तमाम लोगों ने संबोधित किया। कार्यक्रम में स्वच्छ पर्यावरण व स्वस्थ जीवन पर वैज्ञानिक, व्याख्यान, नाटक गीत, कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें उत्कृष्ट बच्चों को पुरस्कृत व सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर आंचल मौर्य, आशुतोष, अरुषिआजाद, अर्चना अग्रहरि, बंदनी, कमलेश यादव, हर्षित पांडे, सत्यम् कसौधन, प्रवीण कुमार जायसवाल, सुरेंद्र यादव, जोया, शोएब अख्तर, अंकित यादव, सचिन समेत तमाम छात्र/छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग से राहुल अग्रहरि, बीट प्रभारी सुधीर कुमार, शिक्षिका पूनम कनौजिया, शिक्षक श्रीकांत, जगदीश यादव, आलोक प्रताप सिंह, राम रतन, राजेश कुमार तथा वन विभाग से बलराम, आलोक शुक्ला समेत तमाम लोग उपस्थित रहे ।कार्यक्रम के समापन पर अतिथियों ने विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण भी किया।

पूर्व विधायक संजय प्रताप की पहल से सोनहा शिवाघाट मार्ग के निर्माण को मिली स्वीकृति

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व विधायक संजय प्रताप जायसवाल की पहल रंग लायी और रुधौली विधानसभा क्षेत्र में राज्य सड़क निधि योजना से सोनहा शिवाघाट मार्ग से 7 किलोमीटर सड़क के निर्माण को स्वीकृति मिल गयी है। यह निर्माण लगभग 16 करोड़ रूपये से पूरा कराया जायेगा। सड़क निर्माण की

स्वीकृति पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रति आभार व्यक्त करते हुये पूर्व विधायक संजय प्रताप जायसवाल ने बताया कि उन्होने प्रमुख सचिव लोक निर्माण विभाग उ.प्र. शासन से रुधौली विधानसभा क्षेत्र में महत्वपूर्ण सड़को के निर्माण कराये जाने का आग्रह किया था। स्वीकृति के साथ ही सड़कों का निर्माण शुरू हो जायेगा और इसके पूरा हो जाने पर लोगों को आवागमन में सुविधा होगी। पूर्व विधायक संजय प्रताप ने कहा कि रूधौली विधानसभा क्षेत्र का विकास उनकी प्राथमिकता है और जितना संभव हो पाता है उनका प्रयास अनवरत जारी है। कहा कि सोनहा शिवाघाट मार्ग का निर्माण बहुत आवश्यक था।

छात्रों की मेहनत से चमक उठी नेताजी की प्रतिमा

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती से एक दिन पूर्व सनई तिराहे पर स्थापित उनकी प्रतिमा विद्यार्थियों की मेहनत से चमक उठी। प्रायः धूल से ढकी रहने वाली प्रतिमा को छात्रों ने श्रमदान कर स्वच्छ किया। प्रतिमा के साथ–साथ चबूतरे एवं पूरे चौराहे की साफ–सफाई कर चूना आदि का छिड़काव किया गया। इसके पश्चात प्रतिमा को फूल–मालाओं से आकर्षक रूप से सजाया गया। उल्लेखनीय है कि नेताजी की जयंती पर प्रतिवर्ष विभिन्न संगठनों द्वारा यहां विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसी क्रम में गुरुवार दोपहर बाद जयंती प्रमुख आचार्य श्री दिलीप श्रीवास्तव एवं नवनीत जी के नेतृत्व में रघुवर प्रसाद जायसवाल सरस्वती शिशु मंदिर इंटर कॉलेज, तेतरी बाजार के छात्रों का एक दल सनई तिराहे पर पहुंचा। वहां पहुंचते ही छात्रों ने प्रतिमा एवं चबूतरे की सफाई का कार्य प्रारंभ कर दिया। थोड़ी ही देर में पूरा परिसर स्वच्छ और चमकदार नजर आने लगा। जब प्रतिमा को फूल–मालाओं से सजाया गया तो नेताजी की प्रतिमा विशेष रूप से आकर्षक प्रतीत होने लगी। चूना छिड़काव के बाद चौराहे की भव्यता ऐसी लग रही थी मानो किसी वीआईपी के आगमन की तैयारी की गई हो। विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. राजेश कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि नेताजी की जयंती के अवसर पर यह स्वच्छता अभियान चलाया गया है, जिससे छात्रों को उनके जीवन और विचारों के बारे में जानने का अवसर मिलेगा। छात्र नेताजी के आदर्शों से प्रेरणा लेकर देश और समाज के उत्थान में योगदान देने के लिए प्रेरित होंगे। इस अवसर पर विद्यालय की छात्र संसद के पदाधिकारियों सहित छात्र सूर्यांश, मनीष, उत्कर्ष, हेमंत, दिव्यांश, फारूख अहमद तथा कर्मचारी विनोद की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

लोकसभा अध्यक्ष, विधानसभा अध्यक्ष उ0प्र0 एवं दिल्ली सहित राज्यसभा उपसभापति को विधायक ने शाल ओढ़ाकर किया सम्मानित

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। उत्तर प्रदेश विधान भवन लखनऊ में त्रिदिवसीय 86वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन के दौरान बुधवार लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, उत्तरप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना एवं विधानसभा अध्यक्ष दिल्ली विजेन्द्र गुप्ता अपने पत्नी संग और राज्यसभा के डिप्टी चेयरमैन (उपसभापति) हरिवंश नारायण सिंह उर्फ हरिवंश से विधायक शोहरतगढ़ विनय वर्मा की बहुत ही सुखद, ऊर्जा प्रदान करने वाली, आत्मीय मुलाकात हुई। विधायक विनय वर्मा ने तीनों महानुभावों

को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया और उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया। वहीं लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और विधानसभा अध्यक्ष उ0प्र0 व दिल्ली सतीश महाना व विजेन्द्र गुप्ता ने विधायक विनय वर्मा से मुलाकात के दौरान अपनी आत्मीय भाव प्रकट किया, जो उन्हें प्रेरणा देने वाला है। वहीं राज्यसभा के डिप्टी चेयरमैन (उपसभापति) ने भी सहृदयता प्रभावित करने वाली है। विधायक विनय वर्मा ने आप सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया। विधायक विनय वर्मा ने कहा कि यह सम्मेलन लोकतांत्रिक परम्पराओं को नई ऊंचाई देने और विधायी (कानून बनाने वाले) कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए काफी महत्वपूर्ण आयोजन है।

महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा रैली का हुआ आयोजन, छात्रों ने लिया जागरूकता का संकल्प

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। स्थानीय शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों स्वामी विवेकानन्द एवं रानी लक्ष्मीबाई के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। इस रैली को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 अरविन्द कुमार सिंह ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। रैली महाविद्यालय परिसर से प्रारम्भ होकर गड़ाकुल तक निकाली गई, जिसमें छात्र–छात्राओं ने सड़क सुरक्षा के प्रति जनजागरूकता फैलाने के उद्देश्य से नारे लगायें। जागरूकता रैली से पहले प्राचार्य

प्रो0 अरविन्द कुमार सिंह ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए सड़क सुरक्षा के नियमों की जानकारी दी और उन्हें इन नियमों का पालन करने तथा समाज को भी इसके लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। इस अवसर पर रानी लक्ष्मीबाई इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 ए0के0 सिंह एवं स्वामी विवेकानन्द इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 रामकिशोर सिंह के साथ–साथ डॉ0 अमित सिंह, डॉ0 अजय सिंह, रत्नेश सोनी, शमशीरूल इस्लाम, राजीव मिश्रा, अश्वनी सिंह, राजीव वर्मा, प्रतीक तथा छात्र–छात्राएं शिवांगी, ज्ञानमती, मोहम्मद फारूक आदि ने सक्रिय सहभागिता निभाई। छात्रों ने संकल्प लिया कि वे स्वयं सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करेंगे और समाज में इसके प्रति जागरूकता फैलाने में अग्रणी भूमिका निभायेंगे।

पुलिस ने प्राथमिक विद्यालय नकथर के बच्चों को नारी सुरक्षा एवं स्वालम्बन हेतु किया जागरूक

दैनिक बुद्ध का संदेश

पकड़ी बाजार/सिद्धार्थनगर। एसएसपी सिद्धार्थनगर डॉ0 अभिषेक महाजन द्वारा महिलाओं के सुरक्षा एवं जागरूकता अभियान9 के सम्बन्ध में दिये गये निर्देश के क्रम में एवं अपर पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थनगर प्रशान्त कुमार प्रसाद व क्षेत्राधिकारी शोहरतगढ़ मयंक द्विवेदी के कुशल पर्यवेक्षण में एवं प्रभारी निरीक्षक शोहरतगढ़ नवीन कुमार सिंह कुशल नेतृत्व में बुधवार को थाना क्षेत्र शोहरतगढ़ में ग्राम सभा नकथर के प्राथमिक विद्यालय में मौजूद रहें महिलाओ, बच्चियों को जागरूक किया गया तथा खुद के साथ होने वाले अपराध से बचने के बारें में जानकारी दी गयी। वहीं दहेज उत्पीड़न पॉक्सो एक्ट महिला संबन्धित मुकदमों में पीड़िताओं की काउंसलिंग की गई तथा मिशन शक्ति 5.0 स्टीकर भी चस्पा किया गया। मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश के सभी थानों पर स्थापित मिशन शक्ति केन्द्र जहां पर अपनी समस्या को दर्ज करा सकती हैं, के बारें में जानकारी दी गई तथा मिशन शक्ति फेज 5.0 के विषय

मे महिलाओं को महिला सम्बन्धी अपराध पर अंकुश लगाने हेतु जारी हेल्पलाइन जैसे 1090 वुमेन पावर लाइन, 181 महिला हेल्पलाइन, 1076 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 112 पुलिस हेल्पलाइन, 1098 चाईल्ड केयर लाइन, 108 एम्बुलेंस हेल्पलाइन, 101 अग्निशमन हेल्पलाइन, 14567 एल्डर हेल्पलाइन, 1930 साइबर हेल्पलाइन नम्बर एवं नये कानून के बारें में जानकारी दी गई। जिसमें प्राधानाध्यापक पप्पू यादव मो0नं0– 770407345, आंगनबाड़ी कार्यकत्री शशिबाला श्रीवास्तव मो0नं0–7570869294 एवं शिक्षामित्र लक्ष्मीबाई मो0नं0–7328329210 और बालिकाओं की संख्या 45 उपस्थित रहीं। इस दौरान यातायात नियमों के सम्बन्ध में भी जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर थाना शोहरतगढ़ की मिशन शक्ति टीम में उप निरीक्षक राजकुमार यादव, हेड कांस्टेबल अविनाश सिंह, कांस्टेबल पवन मौर्या, महिला कांस्टेबल उर्मिला देवी, महिला कांस्टेबल रूबी दुबे व महिला कांस्टेबल कंचनलता सिंह उपस्थित रहीं।

सोनू निगम बने अध्यक्ष और महामंत्री गोलू पासवान को बनाया

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। नगर पंचायत शोहरतगढ़ कस्बे के शिव बाबा मन्दिर के प्रांगण में बुधवार को बैठक के माध्यम से अखिल भारतीय हिन्दू परिषद सिद्धार्थनगर जनपद की शाखा तहसील शोहरतगढ़ का गठन अखिल भारतीय हिन्दू परिषद के प्रदेश महामंत्री अनिल सिंह के देख–रेख में निर्विरोध चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमे सैकडों भी संख्या में सनातनी लोगों ने भाग लिया। वहीं उक्त बैठक में जिलाध्यक्ष अवधेश यादव भी उपस्थित रहें। बैठक को सम्बोधित करते हुए अ0भ0हि0प0 प्रदेश महामंत्री अनिल सिंह ने कहा कि आग जिस तरह से बंगलादेश में हिन्दुओं का उत्पीड़न हो रहा, ऐसी स्थित में हिन्दू एकता को मजबूत करना ही देश को विकासित बनायेगा। एकता के साथ ही लोकप्रिय प्रधानमंत्री एवं लोकप्रिय मुख्यमंत्री उ0प्र0 द्वारा जो जन कल्याणकारी योजनायें चलायी जा रही व उसकी भी आर्थिक रूप से कमजोर हिन्दुओं भी की मजबूत बनाने की आवश्यकता है। वहीं बैठक के माध्यम से तहसील शोहरतगढ़ की निर्विरोध कार्यकारिणी का गठन हुआ। जिसमें संरक्षक दुर्गा प्रसाद त्रिपाठी, अध्यक्ष सोनू निगम, महामंत्री गोलू पासवान, कार्यवाहक अध्यक्ष संजीव पाण्डेय, कार्यकारी अध्यक्ष शिव प्रसाद वर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष बालक दास, संगठन मंत्री केहरि प्रसाद, संयुक्त मंत्री सन्तोष चौधरी हैं। इस दौरान बैठक में उपस्थित लोगों ने अखिल भारतीय हिन्दू परिषद के शोहरतगढ़ तहसील के पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

भाकियू टिकैत संगठन ने किसान दिवस का बहिष्कार कर हुआ मासिक बैठक सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जनपद सिद्धार्थनगर के मुख्यालय स्थित कलेक्ट्रेट परिसर में किसान यूनियन टिकैत संगठन के पदाधिकारियों ने मासिक बैठक गत बुधवार को किया। इस

बैठक के दौरान पदाधिकारियों सहित सभी ने किसानों की समस्याओं को लेकर चर्चा की। वहीं इस बैठक के दौरान किसान दिवस का बहिष्कार के उपरान्त भाकियू टिकैत संगठन के लोगों ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि अगर एक माह में जिलाधिकारी को एक घन्टे का समय नहीं दिया जायेगा, तो फिर किसान दिवस लगाने का मतलब ही क्या है? किसान संगठनों द्वारा किसान दिवस का पूरी तरह से बहिष्कार किया और सभी किसान अम्बेडकर सभागार से बाहर निकल गये। वहीं भाकियू टिकैत संगठन के पदाधिकारियों ने कहा कि शासनादेश में बिल्कुल स्पष्ट है कि किसान दिवस की अध्यक्षता जिलाधिकारी के नेतृत्व में किया जायेगा। लेकिन पिछले दो किसान दिवस से जिलाधिकारी किसान दिवस में मौजूद नहीं हुए और किसान की समस्याओं का कोई समाधान नहीं किया गया। वहीं भाकियू ने कहा कि अगले किसान दिवस में भी इसी तरह जिलाधिकारी मौजूद नहीं रहेंगे तो संगठन सड़क पर उतरने के लिए बाध्य होगा, जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी शासन व प्रशासन की होगी। पूरा किसान संगठन शुक्रवार दिनांक 24 जनवरी 2026 को सड़क जाम करने के लिए बाध्य होगा। है। इसके अलावा भाकियू ने अन्य समस्याओं को लेकर भी जानकारी दी।

सेहुड़ा गांव में पोखरा सुन्दरीकरण में गड़बड़ी को लेकर हुई जांच, विभागीय जांच के बाद होगी कार्यवाही

दैनिक बुद्ध का संदेश

पकड़ी बाजार/सिद्धार्थनगर। मनरेगा के तहत पोखरे के सुन्दरीकरण में अनियमितता सामने आने पर विभागीय स्तर पर सख्ती शुरू हो गई है। विकास खण्ड जोगिया की ग्राम पंचायत सेहुड़ा में हुए कथित भ्रष्टाचार की शिकायत पर बुधवार को डीसी मनरेगा ने गांव पहुंचकर स्थलीय जांच किया। मौके पर कोई भी मजदूर कार्य करते नहीं मिला। मस्टर रोल की जांच में यह भी सामने आया कि दो ऐसे

व्यक्तियों की उपस्थिति दर्ज की गई थी, जो बीते 04 महीनों से मुम्बई में रह रहे हैं। मंगलवार को पोखरे की खुदाई के लिए 38 मजदूरों की उपस्थिति दर्ज दिखाई गई थी। ग्रामीणों के मुताबिक इनमें दो मजदूर गांव में मौजूद ही नहीं थे। इसके बावजूद जिम्मेदारों द्वारा उनकी हाजिरी लगा दी गई। इस अनियमितता की शिकायत किसी ग्रामीण ने खण्ड विकास अधिकारी से कर दी थी। शिकायत मिलने पर बीडीओ ने मंगलवार को ही गांव पहुंचकर जांच की। बीडीओ के गांव पहुंचने की सूचना मिलते ही 14 मजदूर आनन–फानन में पोखरे पर काम करने पहुंच गये। मौके पर मजदूरों की संख्या मस्टर रोल से काफी कम पाये जाने पर बीडीओ ने ग्राम सचिव और रोजगार सेवक के खिलाफ कारण बताओ नोटिस जारी किया था। इसके बाद बुधवार को डीसी मनरेगा संदीप सिंह ने भी गांव पहुंचकर ग्रामीणों से बातचीत की और अभिलेखों की जांच किया। जांच के दौरान मस्टर रोल पहले ही शून्य किया जा चुका था, जिससे मौके पर कार्य बन्द मिला। ग्रामीणों ने अधिकारियों को बताया कि जिन दो व्यक्तियों की उपस्थिति लगाई गई थी, वे लम्बे समय से मुम्बई में रहकर मजदूरी कर रहे हैं। डीसी मनरेगा ने बताया कि बाहर रह रहे व्यक्तियों की हाजिरी लगाना गम्भीर अनियमितता है। मामले में प्रथम दृष्टया लापरवाही और गड़बड़ी सामने आई है। ग्राम सचिव और रोजगार सेवक के विरुद्ध कार्रवाई की संस्तुति की जायेगी। विभागीय जांच के बाद दोषियों पर नियमानुसार सख्त कार्रवाई होगी।

गलत मैपिंग और बीएलओ फीडिंग से जनता हलकान, 2003 की वोटर लिस्ट वाले भी कटघरे में

दैनिक बुद्ध का संदेश

इटवा/सिद्धार्थनगर। इटवा तहसील में चल रही स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (ैप्) प्रक्रिया के तहत नोटिस भेजने का सिलसिला शुरू हो गया है, लेकिन यह प्रक्रिया अब विवाद और अव्यवस्था की वजह बनती जा रही है। फिलहाल कुछ ही गांवों में नोटिस भेजे गये हैं, जबकि बाकी गांवों के लोग रोजाना तहसील के चक्कर काटने को मजबूर हैं। तहसील कर्मचारियों का साफ कहना है कि जब फोन जायेगा, तभी आना। वहीं जिन लोगों को नोटिस जारी हुई है, उनके लिए डॉक्यूमेंट्स के साथ तहसील में हाजिर होना अनिवार्य कर दिया गया है। हालात ऐसे बन गये हैं कि मानो आम जनता को कोर्ट की तारीख मिल गई हो कि उसी तारीख में कागज जमा करने का आदेश है। अब आखिर सबसे बड़ा सवाल है कि गलती किसकी? सबसे अहम और चिन्ताजनक सवाल यह है कि जिनका नाम 2003 की वोटर लिस्ट में दर्ज है, उन्हें भी अगर नोटिस दी जा रही है, तो जिम्मेदार कौन है—विभाग या जनता? वहीं स्थानीय लोगों का आरोप है कि गलत मैपिंग और अनट्रेण्ड बीएलओ द्वारा की गई फीडिंग के चलते सैकड़ों लोगों का नाम जोखिम में डाल दिया गया है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक कमियों का आंकड़ा लगातार सामने आ रहा है। आपको बता दें कि मुंडीला में कमियां सिर्फ कमियों में करीब 200 लोग प्रभावित एवं पिरैला सिसई (अलग टोला/सूची) में 82 मामले सहित सुहेलवा चरखवा में 100 से अधिक लोग नोटिस के दायरे में हैं। इन गांवों के लोग यह पूछ रहे हैं कि जब गलती विभागीय स्तर पर हुई है, तो उसकी सजा जनता क्यों भुगते? वहीं एक ओर नोटिस सीमित गांवों में तो दूसरी ओर बाकियों को सिर्फ फोन आने का इंतजार। इससे तहसील परिसर में रोजाना भीड़ और नाराजगी बढ़ती जा रही है। लोगों का कहना है कि स्पष्ट गाइडलाइन और समयबद्ध सूचना के अभाव में उन्हें बेवजह परेशान किया जा रहा है। स्थानीय नागरिकों और जनप्रतिनिधियों की मांग है कि गलत मैपिंग और बीएलओ फीडिंग की उच्चस्तरीय जांच हो, 2003 की वोटर लिस्ट में नाम वालों को राहत दी जायें, नोटिस प्रक्रिया पारदर्शी और समान रूप से सभी गांवों में लागू की जायें, जनता को कोर्ट जैसी तारीख के दबाव से मुक्त किया जायें। अब देखना यह है कि प्रशासन इस बढ़ते असन्तोष पर क्या कदम उठाता है, या फिर स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (ैप्) प्रक्रिया जनता के लिए और बड़ी परेशानी बनकर रह जायेगी।

कोर्ट के आदेश की अवहेलना का तहसीलदार डुमरियागंज पर पीड़ित ने लगाया आरोप

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। कोर्ट के आदेश की अवहेलना का तहसीलदार डुमरियागंज पर पीड़ित ने आरोप लगाया है। आपको बता दें कि डुमरियागंज तहसील क्षेत्र के कलवारी नानकार गांव में हाईकोर्ट के स्टे आदेश के बावजूद लगी गेहूं की फसल के खेत की जुताई कराये जाने का डुमरियागंज तहसीलदार पर आरोप लगाया है। वहीं पीड़ित के मुताबिक मामला न्यायालय में विचाराधीन है और कोर्ट द्वारा अन्तरिम आदेश (स्टे) पहले से प्रभावी है। इसके बावजूद बिना सूचना व बिना नोटिस के लगी गेहूं की फसल के खेत की जुताई कराये जाने का आरोप लगाया। पीड़ित का कहना है कि कोर्ट के आदेशों को दर—किनार कर जान—बूझकर हमारी फसल नष्ट कराई गई। वहीं मामले को लेकर प्रशासनिक कार्य शैली पर सवाल खड़ा किया है और पीड़ित ने उच्चाधिकारियों से इस कृत्य कार्य को लेकर कार्रवाई की मांग किया है। हालांकि इस मामले में डुमरियागंज तहसीलदार रवि यादव का कहना था कि जिसके नाम से पट्टा हुआ है, उसका पट्टा कई बार खारिज हो चुका है और किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा इसकी बुवाई की गई थी। वहीं दोनों के बीच के विवाद को देखते हुए ये कार्यवाही की गई है। सरकारी बंजर भूमि है, जिसका मामला न्यायालय में विचाराधीन है।

सन्तोष त्रिपाठी बने सिद्धार्थनगर किसान कांग्रेस के नये जिलाध्यक्ष, लोगों में खुशी का माहौल

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी/सिद्धार्थनगर। विधानसभा क्षेत्र बांसी के बसन्तपुर निवासी एवं कांग्रेस के बांसी ब्लॉक पूर्व अध्यक्ष सन्तोष त्रिपाठी को किसान कांग्रेस का नया जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह मनोनयन किसान कांग्रेस के पूर्वी जोन के प्रदेश अध्यक्ष राम भुवन शुक्ला द्वारा किया गया है। सन्तोष त्रिपाठी की नियुक्ति की सूचना मिलते ही जनपद के कांग्रेस कार्यकर्ताओं और वरिष्ठ नेताओं में खुशी का माहौल है। कांग्रेस जिलाध्यक्ष काजी सुहेल अहमद, पूर्व सांसद मोहम्मद मोकीम और पूर्व विधायक चौधरी रविन्द्र प्रताप ने इस निर्णय का स्वागत करते हुए विश्वास जताया कि सन्तोष त्रिपाठी के नेतृत्व में किसान कांग्रेस जनपद में किसानों की समस्याओं को मजबूती से उठायेगी और संगठन को एक नई दिशा मिलेगी। नेताओं ने कहा कि उनके जमीनी अनुभव से पार्टी संगठन और अधिक सशक्त होगा। उनकी नियुक्ति पर प्रदेश महासचिव अरशद खुर्शीद, प्रदेश उपाध्यक्ष अमित सिंह, डॉ0 नादिर सलाम, किरन शुक्ला, देवेन्द्र कुमार गुड्डू, कृष्ण बहादुर सिंह, अभिनय राय, राजन श्रीवास्तव, अनिल सिंह अन्, जावेद मोकीम, पंकज चतुर्वेदी, मैनुद्दीन प्रधान, सादिक अहमद, सतीश चन्द्र त्रिपाठी, रियाज मनिहार, रंजना मिश्रा, आसिफ रिज़वी, मोबीन खान, इश्तियाक चौधरी, अकील अहमद मुनरू, राम चन्दर पाण्डेय, दीपक यदुवंशी, सबरे आलम, गालिब बिसेन, पप्पू खान, विक्की रिजवी, माया भास्कर, गंगेश्वर राय, ऋषिकेश मिश्रा, पवन पाण्डेय, अशोक गुप्ता, सैय्यद गुफरान, वाजिद अली, राजेश शास्त्री, जोखन प्रजापति, शिव कुमार दुबे, गिरजेश कुमार, लोकपति ओझा, होरी लाल श्रीवास्तव, रितेश त्रिपाठी, डॉ0 प्रमोद कुमार, रियाजउद्दीन राईनी, गुल मोहम्मद, मुकेश चौबे, शमशाद अहमद और श्याम किशोर पाण्डेय सहित पार्टी के वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकताओं ने उन्हें बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल कार्यकाल की कामना की है।

मुख्यमंत्री उ0प्र0 से भाजपा नेता श्याम जायसवाल ने शिष्टाचार भेंटकर दी नववर्ष की बधाई एवं शुभकामनाएं

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। उत्तर प्रदेश के लखनऊ में उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री उ0प्र0 योगी आदित्यनाथ जी से बुधवार को भाजपा नेता श्याम जायसवाल ने शिष्टाचार भेंटकर उन्हें नववर्ष 2026 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर यशस्वी मुख्यमंत्री उ0प्र0 योगी आदित्यनाथ जी से विधानसभा 302 शोहरतगढ़ के विषय में विस्तार से सार्थक चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। उक्त अवसर पर पूर्व विधायक धीरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ धीरू भैय्या, सुख—दुख में हमेशा साथ खड़े रहने वाले छोटे भाई आशीष सिंह उर्फ बन्टी भी उपस्थित रहे। भाजपा नेता श्याम जायसवाल ने कहा कि यशस्वी व लोकप्रिय मुख्यमंत्री जी के कुशल मार्गदर्शन में हम अपने क्षेत्र को उन्नति की नई ऊंचाइयों पर ले जाने और जन—जन की समस्याओं के निराकरण के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ निरन्तर कार्य कर रहे हैं।

दुकान में लगी आग, लाखों रुपये के सामान जले

दैनिक बुद्ध का संदेश

पकड़ी बाजार/सिद्धार्थनगर। थाना क्षेत्र शोहरतगढ़ के बरैनिया गांव के टोला टेढ़ी गांव के बाहर नकाही मार्ग पर स्थित ऑटो पार्ट की दुकान में बुधवार की रात्रि आग लग गई। ग्रामीणों ने घन्टों की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आग से दुकान में रखे लाखों के सामान जलकर नष्ट हो गये। प्राप्त जानकारी के मुताबिक क्षेत्र के बरैनिया के टोला टेढ़ी निवासी प्रेम चौधरी गांव के बाहर नकाही मार्ग पर ऑटो पार्ट दुकान चलाता है। वहीं पर गाड़ी धुलने वाली मशीन, हवा भरने वाली मशीन रखकर पंचर भी बनाने के साथ मैकेनिक का भी काम करता है। प्रेम के मुताबिक बुधवार को सुबह बरैनिया गांव निवासी असगर किसी काम से पकड़ी चौराहे की तरफ जा रहा था तो देखा कि उसकी दुकान का सामना जल रहा है। उसने इसकी सूचना प्रेम चौधरी को दी। सूचना पाकर दुकान पर पहुंचा तो देखा कि सारा सामान जल कर नष्ट हो गया है। इस बीच आसपास गांव के लोग भी पहुंचे और काफी प्रयास के बाद आग बुझाई, तब तक सारा सामान जलकर राख हो गया। सूचना पाकर मौके पर 112 डायल की टीम भी पहुंच गई। इसके साथ ही हल्का लेखपाल को भी जानकारी दी गई।

डीएम ने खेसरहा ब्लाक के बनके गांव के उचित दर विक्रेता की दुकान को किया निलम्बित

दैनिक बुद्ध का संदेश

खेसरहा/सिद्धार्थनगर। जनपद सिद्धार्थनगर के विकास खण्ड खेसरहा अन्तर्गत बनके गांव के उचित दर राशन विक्रेता की दुकान को डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने निलम्बित कर दिया। आपको बता दें कि डीएम शिवशरणप्पा जीएन के जनता दर्शन में ग्राम प्रधान बनके सहित ग्रामीणों ने उचित दर विक्रेता श्रीमती तलीबुन्निशा के उचित दर वितरण के विरूद्ध शिकायत की थी। जिसको डीएम ने संज्ञान में लेकर उचित दर विक्रेता श्रीमती तलीबुन्निशा के वितरण के विरूद्ध प्राप्त शिकायत की जांच में अनियमितता पायी गयी। जिसके दृष्टिगत डीएम शिवशरणप्पा जीएन के अनुमोदन आदेश दिनांक 21.01.2026 द्वारा उचित दर विक्रेता की दुकान का अनुबन्ध पत्र निलम्बित कर दिया गया है।

नेपाल में चुनावी रणभेदी शुरू, सांसद बनने की होड़ में दिग्गजों ने बदला पाला, दिग्गजों का हुआ शक्ति प्रदर्शन

दैनिक बुद्ध का संदेश

कपिलवस्तु/नेपाल। पड़ोसी मित्र राष्ट्र नेपाल की राजनीति इन दिनों तेज सियासी उथल—पुथल के दौर से गुजर रही है। आगामी संसदीय चुनाव की दहलीज पर खड़े नेपाल में सांसद बनने की ऐसी होड़ मची है कि कई दिग्गज नेताओं ने अपनी दशकों पुरानी विचारधारा को छोड़कर रातों—रात दूसरी पार्टियों का दामन थाम लिया है। सत्ता की चाहत और टिकट की जुगत में हुए इस पाला बदल ने सीमावर्ती क्षेत्रों के सियासी पारे को सातवें आसमान पर पहुंचा दिया है। वहीं मंगलवार को नामांकन के दिन कपिलवस्तु जिले के विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में लोकतंत्र का उत्सव देखते ही बना। ढोल नगाड़ों की थाप, गगनभेदी नारों और समर्थकों के भारी हुजूम के साथ प्रमुख दलों के प्रत्याशियों ने निर्वाचन आयोग के कार्यालयों तक पहुंचकर अपना—अपना पर्चा दाखिल किया। शक्ति प्रदर्शन के इस दौर में झण्डे—बैनरों से सजी सड़कों पर चुनावी रंग पूरी तरह से चढ़ चुका है। इस बार का चुनाव सिर्फ चेहरों की जंग नहीं, बल्कि बेरोजगारी, महंगाई, बुनियादी विकास और भ्रष्टाचार जैसे सुलगते मुद्दों का असली इम्तिहान है। जनता के बीच इस बात को लेकर गहरी चर्चा है कि बार—बार दल बदलने वाले नेता वास्तव में जनहित के लिए प्रतिबद्ध है या फिर यह सिर्फ सत्ता की मलाई चखने की राजनीति है। अब सारी नजरें नेपाल की जागरूक जनता पर टिकी है, जिसे यह तय करना है कि वे दलबदलू दिग्गजों पर भरोसा करेंगे या फिर किसी नये और स्थिर नेतृत्व को चुनकर संसद भेजेंगे। नामांकन के साथ ही चुनावी रणभूमि तैयार है और जनता का फैसला ही नेपाल के भविष्य की नई इबारत लिखेगा।

बीमार पिता का मुम्बई में चल रहा था इलाज, पीछे से चोरों ने घर खंगालकर उड़ाए लाखों के जेवर

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोल्हौरा/सिद्धार्थनगर। थाना क्षेत्र गोल्हौरा के मऊ नानकार गांव में मंगलवार की रात चोरों ने एक सूने घर को निशाना बनाते हुए लाखों रुपये के सोने—चांदी के आभूषणों पर हाथ साफ कर दिया। घटना के समय घर का मालिक इलाज के लिए मुम्बई में था। चोरी की जानकारी बुधवार सुबह तब हुई जब परिवार के सदस्य की नींद खुली। बीमारी के कारण मुम्बई गया था। परिवार मऊ नानकार निवासी छोटे लाल का पिछले काफी समय से बीमार चल रहा हैं। वे अपनी पत्नी के साथ इलाज के सिलसिले में मुम्बई गये हुए हैं। घर की रखवाली उनका बेटा अनीश कर रहा था। मंगलवार की रात अनीश घर के बरामदे में सो रहा था, जिसका फायदा उठाकर चोरों ने घर के पिछले हिस्से से छत के रास्ते अन्दर प्रवेश किया। बुधवार सुबह जब अनीश कमरे के अन्दर गया, तो ताले टूटे देख उसके होश उड़ गये। चोरों ने बक्से का ताला तोड़कर उसमें रखे लगभग 2.500 किलो चांदी और 70 ग्राम सोने के आभूषण चोरी कर रफूचक्कर हो गयें। पीड़ित परिवार के मुताबिक चोरी गये जेवरों की कीमत लाखों में है। सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच में जुट गई है। इस सम्बन्ध में थानाध्यक्ष गोल्हौरा रामदेव ने बताया कि अभी तक पीड़ित पक्ष की ओर से कोई लिखित तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। तहरीर मिलते ही मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्रवाई की जायेगी और चोरों की तलाश जारी है।

छात्राओं व शिक्षिकाओं को खाद्य एवं पेय पदार्थों में होने वाली मिलावटों को पहचाने के सम्बन्ध में किया जागरूक

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जिलाधिकारी सिद्धार्थनगर शिवशरणप्पा जीएन के आदेश के क्रम में मिलावटी खाद्य एवं पेय पदार्थ के विक्रय पर प्रभावी जागरूकता हेतु सहायक आयुक्त (खाद्य)—ƒƒ के निर्देशन में फूड सेफ्टी आन व्हील (थ्ै) के माध्यम से कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय शोहरतगढ़, कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय खुनियांव, कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय इटवा एवं कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय उसका बाजार में छात्राओं एवं शिक्षकाओं को खाद्य एवं पेय पदार्थो में होने वाली मिलावटों को कैसे पहचाने के सम्बन्ध में जागरूक किया गया। इस दौरान टीम में सहायक आयुक्त (खाद्य) सस आर0एल0 यादव, मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी नरेन्द्र प्रताप सिंह एवं खाद्य सुरक्षा अधिकारियों में हीरा लाल, नीरज कुमार चौधरी, जय प्रकाश और रंजन कुमार श्रीवास्तव सम्मिलित रहें।

जिलाधिकारी सिद्धार्थनगर एक नजर खनन विभाग के जिम्मेदारों पर भी डालें

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। थाना क्षेत्र चिल्हियां एवं सदर थाना क्षेत्र सदर के नौगढ़ चौकी अन्तर्गत खनन अधिकारी व तहसील के जिम्मेदार के सह पर खनन माफियाओं का हौसला बुलन्द है। खनन अधिकारी व तहसील के जिम्मेदार को कई बार सूचना देने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं करते हैं। आपको बता दें कि जिम्मेदारों द्वारा मिट्टी खनन माफियाओं पर कार्यवाही न करते हुए उनको सर्तक कर सुरक्षा व्यवस्था के साथ शिकायत की पूरी जानकारी देते हैं। वहीं खनन विभाग व जिम्मेदार अधिकारियों की मिलीभगत से अवैध तरीके से पूरी रात और सुबह दस बजे तक मिट्टी खनन किया जा रहा है और मिट्टी खनन माफिया राजस्व विभाग को चूना लगा रहे हैं। वहीं शाम होते ही पूरी रात्रि सहित सुबह दस बजे तक सड़क पर सदर थाना क्षेत्र के नौगढ़ चौकी अन्तर्गत एनएच 28 पर कई डम्फर मिट्टी लोडकर दौड़ने लगती है। इस समय खनन अधिकारी व राजस्व विभाग के जिम्मेदार अधिकारी के सह पर प्रतिदिन पूरी रात्रि सहित सुबह दस बजे तक अवैध मिट्टी खनन कर रहे हैं। पूरा मामला बर्डपुर नं0—13 टोला बसावनपुर गांव के पश्चिम का बताया जा रहा है। वहीं क्षेत्र के जागरूक लोगों ने जिलाधिकारी सिद्धार्थनगर शिवशरणप्पा जीएन से एक नजर खनन विभाग के जिम्मेदारों पर भी डालने को कहा है।

समय माता मंदिर परिसर में मेले का हुआ भव्य उद्घाटन, उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

दैनिक बुद्ध का संदेश

खुनुवां/सिद्धार्थनगर। विधानसभा क्षेत्र शोहरतगढ़ के अन्तर्गत सधुआ नगर गांव में स्थित समय माता मंदिर परिसर में बुधवार को आयोजित भव्य मेले का उद्घाटन भाजपा जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान ने फीता काटकर किया। उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा कि ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन समाज को एकजुट करने का कार्य करते हैं तथा हमारी परम्पराओं और आस्था को मजबूती प्रदान करते हैं। इस अवसर पर प्रधान संगठन जिलाध्यक्ष डॉ0 पवन मिश्रा, भाजपा युवा नेता सन्तोष पासवान और मण्डल अध्यक्ष शिवशक्ति शर्मा ने मेले के सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से आपसी भाईचारा बढ़ता है, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होता है और स्थानीय व्यापार को भी बढ़ावा मिलता है। मेले में विभिन्न प्रकार की दुकानें, झूले, सांस्कृतिक कार्यक्रम और धार्मिक अनुष्ठान लोगों के आकर्षण का केन्द्र बने रहें। वहीं बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं ग्रामीण मेले का आनन्द लेने पहुंचे। आयोजकों ने बेहतर व्यवस्थाओं के लिए प्रशासन और स्थानीय सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस दौरान भाजपा जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान, डॉ0 पवन मिश्रा, सन्तोष पासवान, शिवशक्ति शर्मा, गणेश उपाध्याय उर्फ लड्डू, राजकुमार, अरुण कुमार चौधरी, राजन उपाध्याय व ग्रामीण मौजूद रहें।

श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा की द्वितीय वर्षगांठ पर अखंड रामायण पाठ व भव्य भंडारे का आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

डुमरियागंज/सिद्धार्थनगर। शाहपुर स्थित हिन्दू भवन में प्रभु श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की द्वितीय वर्षगांठ के पावन अवसर पर धर्म रक्षा मंच के तत्वावधान में अखंड रामायण पाठ का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बुधवार को धर्म रक्षा मंच के मुख्य संरक्षक एवं पूर्व विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह की उपस्थिति में विद्वान पुरोहितों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण एवं विधि—विधान से पूजन के साथ हुआ। गुरुवार की सुबह विशेष पूजा, वैदिक मंत्रोच्चारण एवं हवन के पश्चात पूर्णाहुति सम्पन्न कर सामूहिक आरती की गई। इसके उपरांत सुबह 11 बजे से राम—राम भोज के रूप में प्रसाद वितरण का सिलसिला प्रारंभ हुआ, जो श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति के बीच शाम चार बजे तक निरंतर चलता रहा। इस अवसर पर पूर्व विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि धार्मिक ग्रंथों के अनुसार अयोध्या प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि है और वर्ष 2024 में अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण पूर्ण होने के बाद यह स्थान सम्पूर्ण राष्ट्र की आस्था का प्रमुख केंद्र बन चुका है। उन्होंने कहा कि श्रीराम मंदिर की द्वितीय वर्षगांठ के साथ रामराज्य एवं विकसित भारत की परिकल्पना साकार होने की दिशा में देश आगे बढ़ रहा है। उन्होंने बीते 20 जनवरी 2024 को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर निकाली गई जनपद स्तरीय उत्सव यात्रा को भी स्मरण किया और बताया कि यह यात्रा हिन्दू भवन शाहपुर से प्रारंभ होकर डुमरियागंज, बांसी, नौगढ़, शोहरतगढ़, ढेबरुआ व इटवा होते हुए चौखड़ा स्थित श्रीराम जानकी मंदिर प्रांगण में सम्पन्न हुई थी। इस दौरान 11 रथों पर सवार प्रभु श्रीराम, माता सीता, लक्ष्मण व हनुमान सहित राम परिवार और सेना का भव्य स्वागत पुष्प वर्षा व आरती के साथ किया गया था। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष द्वितीय वर्षगांठ के उपलक्ष्य में अखंड रामायण पाठ, हवन—पूर्णाहुति एवं भव्य भंडारे का आयोजन कर श्रद्धालुओं ने प्रभु श्रीराम के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री डा. सतीश द्विवेदी, रामकुमार कुंवर, हरिशंकर सिंह, लवकुश ओझा, धर्मराज वर्मा, चन्द्र प्रकाश वर्मा, मधुसूदन अग्रहरि, दीपेंद्र विक्रम सिंह, शिवनाथ चौधरी, आकाश सिंह, गौरव मिश्रा, दिलीप उर्फ छोटे पाण्डेय, व्यासजी पाण्डेय, लालजी शुक्ला, रमेशधर द्विवेदी, राजन अग्रहरि, शत्रुहन सोनी, प्रेम पाण्डेय, धर्मेश पाण्डेय, शैलेश सिंह, हरीश पाण्डेय, पं. राकेश शास्त्री सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

आपसी जुड़ाव व लेखन कला निखार की पहल

एक समय बच्चों की लेखन क्षमता पर विशेष ध्यान दिया जाता था। परीक्षा में बाकायदा सुंदर लेखन के अतिरिक्त अंक दिए जाते हैं। लेकिन आज बच्चे इंटरनेट पर उपलब्ध शॉर्टकट के जरिये हर परीक्षा पास करना चाहते हैं। कट–पेस्ट संस्कृति ने उनकी मौलिक सोच व सृजनात्मकता को ग्रहण लगा दिया। अक्सर छात्र प्रतियोगात्मक परीक्षाओं व लेखन प्रतिस्पर्धाओं में ...

निस्संदेह डिजिटल दौर के नशे में डूबी पीढ़ी वास्तविक रिश्तों से दूर होती जा रही है। वहीं दूसरी ओर छात्रों की लिखने की आदत भी छूटती जा रही है। लेखन हमारी मौलिक व सार्थक अभिव्यक्ति है और सेहत से भी जुड़ा है। पुरानी कहावत हैकृजिसके बहुत सारे दोस्त होते हैं उसका कोई दोस्त नहीं होता। कमोबेश मौजूदा दौर में हकीकत यही है कि जिनके सोशल मीडिया में हजारों–लाखों मित्र व फॉलोवर होते हैं वे निजी जीवन में नितांत एकाकी होते हैं। यह घातक प्रवृत्ति बच्चों में भी तेजी से घर कर रही है। लेखन में हमारी उंगलियों के पोर इस्तेमाल होते हैं, जिनके सिरे हमारे विभिन्न अंगों के स्वास्थ्य से गहरे तक जुड़े रहते हैं। कलम या पेन से लेखन हमारे बौद्धिक विकास में भी सहायक होता है। लेकिन आज मोबाइल व कंप्यूटर, लेपटॉप व टैबलेट के दौर में बच्चे लेखन से दूर होकर खुद को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाते। इस संकट को महसूस करते हुए सीबीएसई ने छात्रों को मित्रों से जुड़ाव व उनकी लेखन कला को निखारने के लिए अभिनव पहल की है। बोर्ड ने डाक विभाग के साथ मिलकर यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन 'इंटरनेशनल लेटर राइटिंग कंपीटिशन–2026' आयोजित करने का निर्णय लिया है। इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम आने वाले छात्र को पचास हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। साथ ही विजेता को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने का मौका भी दिया जाएगा। छात्रों को जो पत्र लिखने का विषय दिया गया है वह मौजूदा हालात में बेहद रोचक व उपयोगी है। छात्र को अपने दोस्त को पत्र लिखना है कि मौजूदा डिजिटल दौर में लोगों का आपसी जुड़ाव व बातचीत क्यों जरूरी है। दरअसल, इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों की सोच को विस्तार देना और उनकी लेखन कला को निखारना है। वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता को जीतने वाले प्रतिभागी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। उल्लेखनीय है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मेडल जीतने पर छात्र को स्विट्जरलैंड के बर्न स्थित यूपीए हेड क्वार्टर का दौरा करने का अवसर मिल सकता है। इस प्रतियोगिता के प्रतिभागी नौ से पंद्रह साल के ही होने चाहिए। वे अपनी एंट्री अंग्रेजी व हिंदी में भी दे सकते हैं। प्रतिभागी अपने स्कूल के माध्यम से ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। निश्चित रूप से बच्चों में लिखने की घटती प्रवृत्ति के दौर में यह एक रचनात्मक प्रयास है। दरअसल, लगातार सोशल मीडिया स्क्रॉल करते बच्चे न केवल रचनात्मक लेखन से वंचित हो रहे हैं, बल्कि अपने दोस्तों से भी कटते जा रहे हैं, जिसका असर उनकी याददाश्त व सृजन क्षमता पर भी पड़ रहा है। एक समय था बच्चे डायरी लेखन व स्कूलों में कविता व लेख लिखने को खासे उत्सुक होते थे। दोस्तों के साथ खेल के मैदान और घर पर खेलना उन्हें शारीरिक व मानसिक स्तर पर स्वस्थ रखता था। लेकिन आज बच्चे ऑनलाइन खेलों में इतने मस्त हो जाते हैं कि उन्हें अपने असली दोस्तों का ख्याल ही नहीं रहता। वे जीवन की वास्तविक चुनौतियों से दूर होते जा रहे हैं। इतना ही नहीं, आज शारीरिक सक्रियता के अभाव के कारण बच्चे छोटी उम्र में ही वयस्कों जैसे रोगों के शिकार होते जा रहे हैं। ये रोग शारीरिक भी हैं और मानसिक भी हैं। छात्र अपना बचपन स्वाभाविक रूप से नहीं जी पा रहे हैं। सही मायनों में वे समय से पहले वयस्क होते जा रहे हैं। एक समय बच्चों की लेखन क्षमता पर विशेष ध्यान दिया जाता था। परीक्षा में बाकायदा सुंदर लेखन के अतिरिक्त अंक दिए जाते हैं। लेकिन आज बच्चे इंटरनेट पर उपलब्ध शॉर्टकट के जरिये हर परीक्षा पास करना चाहते हैं। कट–पेस्ट संस्कृति ने उनकी मौलिक सोच व सृजनात्मकता को ग्रहण लगा दिया। अक्सर छात्र प्रतियोगात्मक परीक्षाओं व लेखन प्रतिस्पर्धाओं में ऑनलाइन माध्यमों व इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री को हेर–फेर के साथ प्रस्तुत करते देखे जा रहे हैं, जो उन्हें व्यावहारिक जीवन की प्रतिस्पर्धा में कमजोर बनाता है। ऐसे में सीबीएसई व पोस्टल विभाग की पहल अनुकरणीय व प्रशंसनीय है।

नवीन अनुभवों को आत्मसात कर व्यक्ति सीख सकता है

माता सरस्वती की .पा से बच्चा, किशोर, युवा, प्रौढ़ और बुजुर्ग सीखते हैं। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत सीखता है। सीखने की कोई उम्र नहीं होती। आचार्य विष्णु शर्मा महान ज्ञानी थे। वे राजा के बच्चों को पढ़ाने गए। बच्चे नटखट थे। उनसे पूर्व वे कई शिक्षक रूपी आचार्यों को गुरुकुल वापस कर चुके थे। बच्चे खेलना चाहते थे। आचार्य विष्णु शर्मा पढ़ाने से पूर्व बच्चों के साथ खेलने लगे। खेल खेल में उन्होंने राजकुमारों को सिखलाया। पंचतंत्र की कहानियों के माध्यम से राजकुमारों का चरित्र निर्माण किया। दरअसल सीखना मनुष्य की एक जन्मजात प्र.ति है। उपयुक्त

वातावरण में हम साकारात्मक बातें सीखते हैं। प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में नए अनुभवों को एकत्र करता रहता है, ये नवीन अनुभव, व्यक्ति के व्यवहार में वृद्धि तथा संशोधन करते हैं। इसलिए यह अनुभव तथा इनका उपयोग ही सीखना या अधिगम करना कहलाता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अलग–अलग सिद्धांतों के माध्यम से योगदान दिया है। अल्बर्ट बंडुरा को सामाजिक अधिगम सिद्धांत का जनक माना जाता है। जेरोम ब्रूनर को खोज अधिगम का जनक कहा जाता है, जबकि इवान पावलोव को आधुनिक अधिगम सिद्धांत का जनक कहा जाता है, जिन्होंने शास्त्रीय अनुबंधन का सिद्धांत दिया था।अल्बर्ट बंडुरा के अनुसार सामाजिक अधिगम सिद्धांत के जनक, जिन्होंने अवलोकन और अनुकरण से सीखने पर जोर दिया (जैसे बोबो डॉल प्रयोग)। जेरोम ब्रूनर के अनुसार खोज अधिगम और रचनावादी .ष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं, जहाँ छात्र स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं। इवान पावलोव के अनुसार शास्त्रीय अनुबंधन के लिए प्रसिद्ध हैं और उन्हें अक्सर ष्आधुनिक अधिगम सिद्धांत का जनकष् कहा जाता है। जबकि जीन पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास और संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांत के महत्वपूर्ण प्रवर्तक हैं।जबकि थार्नडाइक प्रयास और त्रुटि के सिद्धांत और अधिगम के नियमों के लिए जाने जाते हैं। ध्यातव्य है कि सीखना मनुष्य की एक जन्मजात स्वाभाविक प्र.ति है। प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में नए अनुभवों को एकत्र करता रहता है। ये नवीन अनुभव, व्यक्ति के व्यवहार में वृद्धि तथा संशोधन करते हैं। इसलिए यह अनुभव तथा इनका उपयोग ही सीखना या अधिगम करना कहलाता है।

लेखक विनय कांत मिश्र/दैनिक बुद्ध का संदेश

बंगाल में वर्चस्व के लिए टीएमसी-भाजपा टकराव तेज

जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय में भी गिरावट आई है। यहां प्रति व्यक्ति औसत आय राष्ट्रीय आय से भी घटकर नीचे आ गई है। तृणमूल कांग्रेस को सत्ता में आए 14 साल से ज्यादा समय हो चुका है। पार्टी ने राज्य से वामपंथी सरकार को उखाड़ फेंका, लेकिन उसके बाद यहां आपेक्षित विकास नहीं हुआ। कानून–व्यवस्था की स्थिति बदतर हो गई। बंगाल में बेरोजगारी दर बढ़ी है। राज्य में पलायन तेज हुआ है...

भारत के पूर्वी प्रांत बंगाल में सियासी महासंग्राम शुरू हो चुका है। विधानसभा चुनाव मार्च या अप्रैल में होंगे। पांच मई तक नई सरकार को शपथ लेनी होगी। ममता बनर्जी इस समय कई कारणों से सुर्खियों में हैं। ईडी से उनका टकराव हाल की बात है। उससे पहले उन्होंने एसआईआर के खिलाफ जबर्दस्त आवाज उठाई और चुनाव आयोग को धमकाया। इन हालातों के मध्यनजर सुप्रीम कोर्ट को बीच में आना पड़ा और उन्हें शांत किया। ईडी ने वहां के कोयला कारोबारी और एक एजेंसी आईपैक के दफ्तरों और अन्य ठिकानों पर मनी लॉन्डरिंग के मामले में छापा मारा। ममता दीदी स्वयं वहां पहुंच गईं और फाइलें, लैपटॉप वगैरह उठा ले गईं तथा अपने पुलिस वालों से कहकर ईडी अफसरों और कर्मियों पर एफआईआर तक करवा दी। एफआईआर करवाना उनका पुराना तरीका है ताकि प्रतिद्वंद्वी पर दबाव बना रहे। अब मामला हाईकोर्ट और यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट में चला गया। सुप्रीम कोर्ट में देश के सबसे बड़े दो वकील ममता दीदी की तरफ से खड़े हो गए। ईडी ने कोलकाता छापेमारी मामले में बंगाल पुलिस के कामकाज में दखलंदाजी के आरोपों के बीच बंगाल पुलिस के महानिदेशक को हटाने की मांग की। सुप्रीम कोर्ट में ममता के वकीलों ने राज्य पुलिस द्वारा की गयी एफआईआर को न्यायसंगत बताया। न्यायाधीश ने नाराजगी जताई और कड़े शब्दों में कहा कि यह गंभीर विषय है कि राज्य पुलिस किसी वैधानिक

केंद्रीय एजेंसी की कार्रवाई में हस्तक्षेप कर रही है। अदालत ने स्पष्ट किया कि संविधान हर संस्था को स्वतंत्र रूप से काम करने का अधिकार देता है और राज्य पुलिस को यह छूट नहीं है कि वह ईडी जैसी एजेंसियों के काम में बाधा डाले। कोर्ट ने साफ किया कि अंतिम फैसले तक ईडी अधिकारियों के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं होगी। दूसरी ओर, ममता दीदी ने एसआईआर के खिलाफ मुहिम छेड़ रखी है, जहां से उन्हें डर है कि उनके समर्थकों के नाम ज्यादा संख्या में कट न जाएं। सभी जानते हैं कि बंगाल में घुसपैठ के चलते लाखों की तादाद में बांग्लादेशी मौजूद हैं। वे खुलेआम टीएमसी का समर्थन करते हैं और इसलिए पार्टी नहीं चाहती है कि उनके नाम कटें। इसके अलावा वहां रोहिंग्या भी बड़ी संख्या में आ घुसे हैं। उन्हें भी देश से भगाने की बात की जा रही है लेकिन ममता दीदी इसे स्वीकार नहीं करतीं। कम्युनिस्ट पार्टी और कांग्रेस के बंगाल में पतन के बाद अब वहां एक दशक से लड़ाई भाजपा बनाम तृणमूल के बीच है। भाजपा ने पिछले दो चुनावों में काफी प्रयास किया, लेकिन वे टीएमसी की आक्रामक नीति और प्रशासन के सहयोग के सामने जीत का बिगुल नहीं बजा पाए। इस बार पार्टी नई रणनीति के साथ अमित शाह के नेतृत्व में उतरी है। उन्होंने बंगाल के चुनाव की कमान अपने हाथों में ले ली है। गृहमंत्री ने दिसंबर महीने में कोलकाता जाकर वहां पहले तो अपने पार्टी संगठन से जुड़े लोगों से बातचीत की और फिर आरएसएस के कार्यकर्ताओं से मंत्रणा की। मकसद था कि दोनों संगठनों में सामंजस्य बना रहे। उन्होंने बहुत ही आक्रामक ढंग से शुरुआत की है और उसके बाद पीएम मोदी खुद ही बंगाल पहुंच गए। उन्होंने वहां के हुगली जिले के सिंगूर में 830 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ किया। इतना ही नहीं, देश की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन भी बंगाल से ही शुरू की गई, जबकि राज्य को पहले ही लगभग आधा दर्जन अमृत भारत एक्सप्रेस सेवाएं मिल चुकी हैं। ये सभी कार्यक्रम वोटरों को आकर्षित करने की योजना का हिस्सा हैं। भाजपा और अमित शाह की नीति रही है कि बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं का हौसला बनाए रखा जाए। गृहमंत्री ने बंगाल में यही किया और उनसे हालात का जायजा लिया। इसके साथ ही उन्होंने पार्टी के चुनींदा नेताओं तथा कार्यकर्ताओं के साथ भी गहन बातचीत की। स्थिति की समीक्षा करने और रणनीति बनाने के लिए उन्होंने भाजपा के विधायकों, सांसदों के अलावा म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के सभासदों के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। बंगाल, जो कभी देश का एक बहुत बड़ा व्यापारिक केंद्र था, अब गिरावट के कारण 2023–24 में छठे स्थान पर पहुंच गया है। जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय में भी गिरावट आई है। यहां प्रति व्यक्ति औसत आय राष्ट्रीय आय से भी घटकर नीचे आ गई है। तृणमूल कांग्रेस को सत्ता में आए 14 साल से ज्यादा समय हो चुका है। पार्टी ने राज्य से वामपंथी सरकार को उखाड़ फेंका, लेकिन उसके बाद यहां आपेक्षित विकास नहीं हुआ। कानून–व्यवस्था की स्थिति बदतर हो गई। बंगाल में बेरोजगारी दर बढ़ी है। राज्य में पलायन तेज हुआ है। राज्य के स्कूल–कॉलेज को टीएमसी ने राजनीति का गढ़ बना दिया है।

विश्व व्यवस्था में रणनीतिक उलझाव पर बदलता नजरिया

15 से 20 साल वाला क्षितिज रखना स्थायित्व को रियायत नहीं हैय यह संरचना के साथ धैर्य को पुष्ट करना है। यह संवाद की पूर्व–बंदी या एकतरफा बदलावों को वैधता दिए बगैर, अस्पष्टता को दायित्व में और टालमटोल को जवाबदेही में रूपांतरित करना है। एक तयशुदा अवधि के लिए यथास्थिति बनाना बड़े लाभार्थी को उसके फायदे से वंचित करता है और शांत रहकर...

रणनीतिक अस्पष्टता कभी वक्त निकालने का तरीका था जिससे तनाव घटाया जा सके। ताकि इतिहास अपना काम कर सके। यह स्थायित्व में भी मददगार थी। लेकिन मौजूदा बिखरावपूर्ण विश्व व्यवस्था में, यह फैसले टालने, जवाबदेही बगैर सहनशक्ति परखने व तथ्य बदलने का जरिया है। यह अस्पष्टता अचानक विफल नहीं हुई बल्कि जानबूझकर की गयी। दशकों तक, रणनीतिक अस्पष्टता को समझदारी की तरह लिया जाता था, समय निकालने का तरीका, तनाव घटाएं और इतिहास को अपना काम करने दें। एक अधिक संतुलित दुनिया में, इसने स्थायित्व बनाने का काम किया। मौजूदा बिखरावपूर्ण विश्व व्यवस्था में, यह फैसला टालने, जवाबदेही बगैर सहनशक्ति परखने व तथ्य बदलने का जरिया है। जो उपाय कभी शांति कायम रखता था, आज अनिश्चितता बढ़ा रहा है। परिणाम है नियंत्रित विचलन। अस्पष्टता अचानक विफल नहीं हुईय जानबूझकर की गयी। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था ने शनैरू–शनैः संयम को चुप्पी मानना सीख लिया। मुश्किल सवाल अनुत्तरित छोड़ दिए गये, सीमाएं अस्पष्ट और समयसीमा अनिर्धारित बनी रहीं। असमान महत्वाकांक्षा और अवसरवादी संशोधनवाद के युग में, अस्पष्टता सुरक्षा कवच की बजाय बोझ बन गई, जिसका दोहन वे करते हैं जिन्हें देरी करते जाने से फायदा है और भुगतना उन्हें पड़ता है जो विश्व व्यवस्था का पालन करने पर निर्भर रहते हैं। रणनीतिक अस्पष्टता की शुरुआत टालमटोल के तौर पर नहीं हुई थी। इसका मकसद था इरादे परखना और तालमेल बनने देना। यह कारगर रहा क्योंकि यह पारस्परिक आधार पर था और इसमें संतुलन शामिल था। समय के साथ, दोहराव ने इसे खोखला कर डाला। एक अस्थायी उपाय वह प्रवृत्ति बन गयायजिसका उद्देश्य नीयत स्पष्ट करना था, वह यथास्थिति की धीरे–धीरे, हिसाब–किताब लगाकर समाप्ति का तरीका बन गया। जब अस्पष्टता असमानता हो

जाएः अनिर्धारित सीमाओं से इतर इसकी मिसाल कहीं इतनी साफ दिखाई नहीं देती। बहुत ऊंचाई वाले इलाकों में, नीति का मोल विरल हवा और जमी बर्फ में मापा जाता है। सबसे पहले नागरिकों को भुगतना पड़ता है, मसलन,कोई चरवाहा किसी रोज पाए कि एक गैर–मान्यताप्राप्त बाड़बंदी ने पीढ़ियों पुरानी उसकी चरागाह छीन ली या जब कोई ग्रामीण पाए कि पुरखों से चला रहा उसके क्षेत्र का नक्शा रात में खामोश सैनिक गश्त से पुनर्निधारित कर दिया गया। दूर समुद्र में , मछुआरों का यह पाना कि उनकी आजीविका रातोंरात अपराध बन गयी, इसलिए नहीं कि नक्शों की लकीरें सार्वजनिक रूप से पुनरू खींची गईं, बल्कि इसलिए कि वे जानबूझकर अस्पष्ट छोड़ दी थी। ऐसी सीमाओं पर, सैनिक अनिश्चितता को जीवन का अंग मानकर जीते हैं। वे उसी ऊबड़–खाबड़ जमीन पर चलते हैं, मामला निबटा देने की बजाए संयम बरतते हैं। जब अस्पष्टता पककर टकराव में बदल जाती है, तब उन्हें राजधानियों में अनिर्णय से पैदा जोखिम संभालने के लिए मानव बारूदी सुरंगों के रूप में आगे कर दिया जाता है। लीक बदलने की लोकतांत्रिक कीमत : लंबे समय तक जारी अस्पष्टता की कीमत समान रूप से नहीं झेलनी पड़ती। लोकतंत्र बहसों और जवाबदेही के जरिये अनिश्चितता को जज्ब करते हैं। संशोधनवादी व्यवस्थाएं छद्म रूप से अस्पष्टता चलाती हैं। असमान संदर्भों में, अस्पष्टता सबसे मजबूत पक्ष का भरोसेमंद साथ निभाती है। लीक में बदलाव असमान लागत लागू करता है और औपचारिक पसंद के बगैर, अंश–वार बदलाव बनाता है। ऐसी स्थितियों में, स्पष्टता टकराव नहीं बढ़ाती य यह लोकतांत्रिक स्वच्छता है। नियम कौन लिखता है : जब लोकतंत्र प्रारूप बनाने को टालते हैं, तो वे मूल स्वरूप खो देते हैं। नियम सहमति से नहीं, बल्कि बारंबार प्रक्रिया से बदलते हैं। अस्पष्टता विकल्पों का तबतक क्षरण करती जाती है जबतक कि सिर्फ एक ही बचे। एक सदी से भी पहले, लॉर्ड कर्जन ने पाया था कि सीमाओं को तय करने के बजाय उन्हें अनिर्धारित छोड़ देने से लाभ ज़्यादा होता है। उनकी यह अंतदृष्टि फायदा उठाने की गर्ज से थी। अस्पष्टता उस हित में है जो नक्शे को परिवर्तनीय और वक्त को हथियार की तरह बरतता है। समय सीमाओं का टकराव –2035 और 2047 रू वह तर्क अब मद्धिम पड़ रहे वापसी बिंदु पर पहुंच चुका है। स्थिरता अब अनकही बातों पर और निर्भर नहीं रह सकतीय यह योजनाबद्ध होनी चाहिए। जल्दबाजी तारीखों के टकराव से चालित है। चीन ने वर्ष 2035 को राष्ट्रीय कायाकल्प की समय–सीमा तय किया है। जबकि भारत का संकल्प साल 2047 तक है, जोकि आजादी का शताब्दी वर्ष है। बीच के दशकों को दूसरे की समयसीमा के हवाले करके कोई भी एक पक्ष ताकत का सम्यतागत मील पत्थर हासिल नहीं कर सकता। जब एक पक्ष दशकों की योजना बना रहा हो और दूसरे की प्रतिक्रिया टुकड़ों में हो, तो अस्पष्टता तटस्थ नहीं रहतीय यह महत्वाकांक्षा घटाने वाली बन जाती है। समय अब क्यों मायने रखता है रू योजनाबंदी को समयबद्ध अनुशासन की जरूरत होती है। समय सीमा वाली रूपरेखा टाल–मटोल के फायदों को उलट देती है। एक बार जब सीमा व समय तय हो जाए, तब संयम को औचित्य की और अधिक जरूरत नहीं रहतीय उल्लंघन को पड़ती है। व्यावहारिक रूप से, यह तर्क इशारा करता है एक दीर्घ–कालिक,समय–सीमाबद्ध, महीनों में नहीं बल्कि दशकों में मापी जाने वाली रूपरेखा, वह जो समस्या के निबटारे में देरी वाले यथास्थिति उपाय को ठंडे बस्ते में डाल देने वाली, अधिक संतुलित घड़ी हो।

रुपया शुरुआती कारोबार में सर्वकालिक निचले स्तर से उबरा, 15 पैसे चढ़कर 91.50 प्रति डॉलर पर

रुपया बृहस्पतिवार को शुरुआती कारोबार में अपने सर्वकालिक निचले स्तर से उबरते हुए 15 पैसे की बढ़त के साथ अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 91.50 पर पहुंच गया।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ग्रीनलैंड अधिग्रहण के लिए यूरोप पर शुल्क लगाने का कोई इरादा न होने की बात कहने के बाद जोखिम लेने की प्रवृत्ति में सुधार से घरेलू मुद्रा को बल मिला।

विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि दावोस में राष्ट्रपति ट्रंप के ग्रीनलैंड पर अमेरिकी नियंत्रण स्थापित करने के प्रयास में आठ यूरोपीय देशों पर लगाए जाने वाले शुल्क को बुधवार को रद्द करने की घोषणा के बाद निवेशकों का मनोबल बढ़ा है। इसके अलावा, घरेलू शेयर बाजारों में सकारात्मक रुख ने भी घरेलू मुद्रा को समर्थन दिया।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 91.54 प्रति डॉलर पर खुला। फिर मजबूत होकर 91.50 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव से 15 पैसे की बढ़त दर्शाता है। रुपया बुधवार को 68 पैसे टूटकर अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले सर्वकालिक निचले स्तर 91.65 पर बंद हुआ था।

इस बीच, छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.02 प्रतिशत की बढ़त के साथ 98.78 पर रहा। घरेलू शेयर बाजार के मोर्चे पर सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 533.37 अंक चढ़कर 82,443 अंक पर जबकि निफ्टी 157.20 अंक की बढ़त के साथ 25,314.70 अंक पर पहुंच गया।

अंतरराष्ट्रीय मानक ब्रेंट क्रूड का भाव 0.17 प्रतिशत की बढ़त के साथ 65.35 डॉलर प्रति बैरल रहा। शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) बुधवार को बिकवाल रहे थे और उन्होंने शुद्ध रूप से 1,787.66 करोड़ रुपये के शेयर बेचे।

घरेलू शेयर बाजारों में शुरुआती कारोबार में करीब एक प्रतिशत का उछाल

घरेलू शेयर बाजारों सेंसेक्स और निफ्टी में बृहस्पतिवार को शुरुआती कारोबार में करीब एक प्रतिशत की तेजी दर्ज की गई। भू–राजनीतिक व्यापार तनाव में कमी के बाद वैश्विक भावना में सुधार और निवेशकों का मनोबल बढ़ने से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक तथा मोटर वाहन कंपनियों के शेयर में बढ़त से बाजार में तेजी आई। बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 774.04 अंक या 0. 94 प्रतिशत चढ़कर 82,683.67 अंक पर जबकि एनएसई निफ्टी 233.85 अंक या 0.93 प्रतिशत की बढ़त के साथ 25,391.35 अंक पर पहुंच गया। सेंसेक्स में शामिल 30 कंपनियों में से टाटा स्टील, अदाणी पोर्ट्स, एशियन पेंट्स, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स के शेयर में सबसे अधिक तेजी रही।

लिमिटेड, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, सन फार्मास्यूटिकल्स, कोटक महिंद्रा बैंक, इटर्नल, ट्रेंट, महिंद्रा एंड महिंद्रा और बजाज फिनसर्व बैंक के शेयर में मामूली गिरावट दर्ज की गई। एशियाई बाजारों में मिला–जुला रुख देखने को मिला। जापान का निक्की 225 और दक्षिण कोरिया का कॉस्पी बढ़त में रहे जबकि चीन के एसएसई कम्पोजिट तथा हांगकांग के हैंग सेंग में गिरावट दर्ज की गई।

अमेरिकी बाजार बुधवार को बढ़त के साथ बंद हुए थे। अंतरराष्ट्रीय मानक ब्रेंट क्रूड का भाव 0.14 प्रतिशत की बढ़त के साथ 65.33 डॉलर प्रति बैरल रहा। शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) बुधवार को बिकवाल रहे थे और उन्होंने शुद्ध रूप से 1,787.66 करोड़ रुपये के शेयर बेचे। वहीं घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 4,520. 47 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे।

निबंध प्रतियोगिता के मेधावियों को पुरस्कृत कर थाना प्रभारी ने बढ़ाया हौसला

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। हर्रैया थाना क्षेत्र के अंतर्गत गजाधर सिंह अंगद सिंह एकेडमी हर्रैया में पुलिस अधीक्षक अभिनंदन के निर्देश के क्रम में थाना प्रभारी तहसीलदार सिंह द्वारा साइबर क्राइम एक चुनौती विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। जिसमें कुल 369 बच्चों ने प्रतिभाग किया था। प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन करने वाले बच्चों के लिए पुरस्कार वितरण कार्यक्रम विद्यालय परिसर में गुरुवार को किया गया। प्रतियोगिता में दीक्षा सिंह और सत्येन्द्र कुमार पाण्डेय को प्रथम, खुशी और सात्विक को द्वितीय, कली श्रीवास्तव और सुशील मौर्य को तृतीय, अर्चिता और अपूर्व त्रिपाठी को चतुर्थ तथा नीशू वर्मा और हिमांशु पाण्डेय को पांचवा स्थान प्राप्त हुआ। पुरस्कार वितरण के मुख्य अतिथि थाना प्रभारी ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्त करके उनका हौसला बढ़ाया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए थाना प्रभारी ने कहा कि निबन्ध प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य छात्र–छात्राओं को साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करना था। साइबर सिक्योरिटी से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें बताते हुए विद्यार्थियों को इंटरनेट का सुरक्षित उपयोग करने, अनजान लिंक से बचने, ओटीपी एवं पासवर्ड गोपनीय रखने और ऑनलाइन ठगी से सतर्क रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि डिजिटल युग में सतर्कता ही सुरक्षा है। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुभाष चंद्र त्रिपाठी ने इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर दिया तथा विद्यार्थियों से सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाने का आह्वान किया। थाने के मुख्य आरक्षी सौरभ त्रिपाठी, आरक्षी राजेश कुमार यादव, आरक्षी शिव यादव एवं आरक्षी धर्मेंद्र यादव ने भी बच्चों को साइबर क्राइम से सतर्क रहने की सलाह दिया। इस अवसर पर पंकज सिंह, सन्तोष श्रीवास्तव, दिनेश पाण्डेय, प्रभाकर पाण्डेय,सत्येंद्र सिंह ,सुधीर पाठक ,दिनेश मिश्रा, पवन मिश्रा, रामनरेश शर्मा, शिवराम पटेल, अमरेश पाण्डेय, अमित मिश्रा, कैलाश त्रिपाठी, अलगू प्रसाद, .ष्ण मोहन गुप्ता, राकेश यादव, मृत्युंजय यादव , मृगेंद्र पाण्डेय, दीपक यादव, कमलेश शुक्ला, धनवंत शुक्ला, प्रवीण सिंह, अमरनाथ के सरवानी, प्रद्युम्न उपाध्याय, सुनील मौर्या, राकेश कुमार यादव अंजू श्रीवास्तव , कल्पना मिश्रा, अंजली सिंह, बीनू वर्तिका श्रीवास्तव, निहारिका सिंह, पूनम सिंह, मुस्कान यादव, सोनी शुक्ला, अनीता सिंह, प्रियंका पाण्डेय, संध्या त्रिपाठी, खुशी सोनी, सपना सिंह, सिमरन सिंह ,पद्मा मिश्रा, हिमांशु मिश्रा, मधु शर्मा, कामना त्रिपाठी, संध्या श्रीवास्तव, श्रुति श्रीवास्तव, श्वेता सिंह, वंदना विश्वकर्मा, संयोगिता श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

यूनिक ग्लोबल एकेडमी पायकपुर में भारत स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण शिविर का समापन....

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। दुबौलिया ब्लाक के ग्राम पायकपुर स्थित यूनिक ग्लोबल एकेडमी में आयोजित तीन दिवसीय भारत स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण शिविर का समापन मुख्य अतिथि एकेडमी के निदेशक आलोक कुमार श्रीवास्तव ने बच्चों द्वारा बनाए गए टेंट का निरीक्षण करते हुए किया। शिविर के दौरान छात्र–छात्राओं को अनुशासन,नेतृत्व क्षमता, सेवा भावना, आपदा प्रबंधन,प्राथमिक उपचार, तंबू निर्माण,मार्च पास्ट,पाक विधा,गैजेट निर्माण,पुल निर्माण तथा देशभक्ति से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण प्रशिक्षण दिए गए।समापन समारोह में विद्यालय प्रबंधन एवं प्रशिक्षकों ने प्रतिभागी स्काउट–गाइड्स के उत्साह और अनुशासन की सराहना की। निदेशक आलोक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि स्काउट–गाइड प्रशिक्षण का उद्देश्य युवाओं के चरित्र का निर्माण करना, अच्छी स्वास्थ्य आदतें विकसित करना, उपयोगी कौशल सिखाना और समाज सेवा की भावना को बढ़ावा देना है, ताकि वे आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक बन सकें और समाज में सकारात्मक भूमिका निभा सकें यह एक शैक्षिक आंदोलन है जो युवाओं के शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास में मदद करता है. विद्यालय के प्रधानाचार्य इतेंद्र कुमार ने प्रशिक्षण शिविर के सफल आयोजन के लिए अतिथियों, प्रशिक्षकों का आभार व्यक्त करते हुए छात्र–छात्राओं से सीखे गए गुणों को अपने दैनिक जीवन में अपनाने की अपील की। कहा की प्रशिक्षण शिविर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है और उन्हें समाज व राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाता है।समापन अवसर पर उत्ष्ट प्रदर्शन करने वाले स्काउट गाइड्स को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर श्रीमती नूपुर त्रिपाठी , प्रताप शंकर पांडेय , जया पांडेय, दिलीप सिंह, हरिओम श्रीवास्तव, बी.एन सिंह, मनोरमा पटेल, मनोरमा नायक, चंदन ओझा, राजेश श्रीवास्तव सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रगान के साथ शिविर का विधिवत समापन किया गया।

श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा की द्वितीय वर्षगांठ पर कार्यक्रम आयोजित

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। भगवान श्रीराम जी के मंदिर की प्राण–प्रतिष्ठा के दो वर्ष पूर्ण होने के पावन अवसर पर सरस्वती विद्या मंदिर, रामबाग बस्ती में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्य वायुनन्दन मिश्र ने प्राण–प्रतिष्ठा के साक्षी होने का उल्लेख करते हुए भगवान श्रीराम के आदर्श जीवन, मर्यादा, त्याग एवं राष्ट्रप्रेम से संबंधित प्रेरक प्रसंग सभी भैयाओं को

सुनाए। कार्यक्रम के दौरान प्रधानाचार्य गोविन्द सिंह ने भी भैयाओं को संबोधित करते हुए श्रीराम के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संदेश दिया। इसी क्रम में आज की वंदना सभा में विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा सविष्कार . युवा सृजन नवाचार महोत्सव में उत. ष्ट प्रदर्शन करने वाले सभी भैयाओं एवं आचार्य अंकित कुमार गुप्ता को सम्मानित किया गया। गौरतलब है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा आयोजित "सविष्कार . युवा सृजन नवाचार महोत्सव" में सरस्वती विद्या मंदिर, रामबाग बस्ती के भैयाओं ने जूनियर वर्ग में अपने नवाचार आधारित प्रोजेक्ट प्रस्तुत कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। प्रधानाचार्य गोविन्द सिंह के नेतृत्व एवं आचार्य अंकित कुमार गुप्ता के मार्गदर्शन में भैयाओं ने प्रभावी प्रदर्शन करते हुए विभिन्न स्थान प्राप्त किए। भैया सचिन एवं उनकी टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त कर ध्5100 की पुरस्कार राशि, मेडल एवं प्रमाण पत्र हासिल किया। भैया अथर्व गुप्ता ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर ध्2100 की पुरस्कार राशि, मेडल एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किया। भैया अखण्ड जायसवाल ने पंचम स्थान प्राप्त कर ध्1000 की पुरस्कार राशि अर्जित की। साथ ही भैया सूर्यांश को उनके सराहनीय प्रयास हेतु सांत्वना पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि पर विद्यालय के प्रबंध समिति अध्यक्ष गोपाल गाडिया , प्रबंधक प्रो. डॉ. सुरेन्द्र प्रताप सिंह , कोषाध्यक्ष प्रहलाद मोदी सहित समस्त प्रबंध समिति सदस्यों ने भैयाओं को शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। यह सफलता विद्यालय, अभिभावकों एवं सम्पूर्ण क्षेत्र के लिए गर्व का विषय है।

खुरपका मुंहपका रोग का टीकाकरण अभियान प्रारंभ

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण योजना अंतर्गत सातवा चरण खुरपका मुंहपका रोग का टीकाकरण अभियान 22 जनवरी 2026 से प्रारंभ किया जा रहा है जो अनवरत 45 दिन 10 मार्च 2026 तक चलाया जाएगा। इस अभियान के अंतर्गत जनपद के 213016 गोवंशीय एवं महिषवंशीय पशुओं को खुरपका मुंहपका रोग के टीके से आच्छादित किया जाएगा। निदेशालय पशुपालन विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा जनपद सिद्धार्थनगर को 211846 डोज जनपद सिद्धार्थनगर को आवंटित किया गया है। जिसको जनपद के सभी विकास खंडो को लक्ष्य के अनुसार वितरण किया जा चुका है तथा प्रत्येक विकासखंड में उपमुख्य। पशु चिकित्सा अधिकारी/ पशु चिकित्सा अधिकारी को नोडल अधिकारी नामित कर टीम का गठन भी कर दिया गया है। एक टीम में चार सदस्यों को रखा गया है। यह टीम सर्वप्रथम जनपद के सभी कान्हा गौशाला,स्थायी व् अस्थाई गौशाला

में टीकाकरण कार्य करेगी तदोपरांत शेष बचे ग्रामों में टीकाकरण कार्य रोस्टर के अनुसार किया जाएगा। जनपद के सभी नोडल अधिकारियों एवं उनके साथ लगे टीमों में कर्मचारियों को सभी पशुओं को 2 उस डीप इंट्रामस्कुलर इंजेक्शन लगाने के लिए निर्देशित किया गया है। अभियान की शुरुआत करते हुए उक्त बातें मा विधायक कपिलवस्तु श्री श्यामधनी राही ने कही। मा विधायक जी ने हरी झंडी दिखाकर वाहन सहित टीम को रवाना किया। कार्यक्रम का संचालन पशुधन प्रसार अधिकारी अरुण कुमार प्रजापति ने की। अभियान कों सम्बोधित करते हुए नोडल अधिकारी उप मुख्य पशु चिकित्साधिकारी(चिकित्सा एवं स्वास्थ्य) डॉ ऋषिकेश दर्शन ने बताया कि खुरपका मुंहपका रोग एक विषाणु जनित संक्रामक रोग है जो मुख्य रूप से गाय, भैंस, भेड़,बकरी और सूअर जैसे पालतू पशुओं को प्रभावित करता है। यह रोग पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता पर गहरा प्रभाव डालता है जिससे पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। खुर पका मुंह पका रोग के लक्षण प्रारंभिक चरण में पशुओं को बुखार आना तथा बाद मे पशुओं के मुंह, जीभ,मसूड़े,थन एवं खुरों पर छाले व फफोले बन जाते हैं तथा मुंह में छाले पड़ने से पशुओं को लार अधिक टपकने लगती है, पशु लंगड़ाने भी लगता है और पशु खाना पीना छोड़ देता है। पशुओं से इस रोग के रोकथाम एवं नियंत्रण के उपाय नियमित टीकाकरण कराना है। तथा इस रोग से संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए। इस रोग से बचाव हेतु विभाग द्वारा समय–समय पर जागरूकता अभियान भी चलाया जाता है। इस अवसर पर उपमुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ राजबहादुर यादव,डॉ ऋषिकेश दर्शन,डॉ देवेंद्र कुमार गौतम , पशु चिकित्सा अधिकारी,डॉ राजकमल यादव ,डॉ प्रदीप कुमार,डॉ बनारसी मिश्रा,पशुधन प्रसार अधिकारी अरुण कुमार प्रजापति, अमित यादव, अरुण पाण्डेय, चंद्रजीत सहित टीम के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

भाजपा जिलाध्यक्ष ने खेरसहा बीडीओ से ैप्ट मतदाता पंजीयन की ली जानकारी

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। विधानसभा क्षेत्र बांसी अंतर्गत विकास खंड कार्यालय खेसरहा पहुंचकर जिलाध्यक्ष भाजपा कन्हैया पासवान ने बीडीओ के साथ मतदाता पंजीयन की समीक्षा की।जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान ने खंड विकास अधिकारी अमित सिंह से पूरे खेसरहा ब्लॉक के सभी बूथों के मतदाता पंजीयन की जानकारी ली उन्होंने बीडीओ से फॉर्म 6 को अधिक से अधिक भरवाने व सुचारु रूप से नोटिस निस्तारण के लिए कहा।जिलाध्यक्ष ने बीडीओ से कहा विशेष प्रगाढ़ मतदाता पुनरीक्षण अभियान में 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर रहे युवा वर्ग व छूटे हुए मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में जोड़ने हेतु आवश्यक प्रपत्र लेकर समय से कार्य को बी०एल ०ओ० गण सभी गांव में पूर्ण करें।इस दौरान खंड विकास अधिकारी अमित सिंह,जिला मीडिया प्रभारी भाजपा निशांत पाण्डेय,सौरभ त्रिपाठी आदि लोग उपस्थित रहें।

जब-जब धर्म की हानि होती है तो धर्म की रक्षा करने स्वयं भगवान आते है

दैनिक बुद्ध का संदेश

संतकबीर नगर। श्रीमद्भागवत कथा जो हरैया बाबू में पूर्व प्रमुख सांथा स्व. देवेन्द्र प्रताप सिंह के आवास पर आयोजित हो रहा है के कथा व्यास अवधेश शास्त्री को मुख्य यजमान नीला सिंह के प्रतिनिधि/ पुत्र अखण्ड प्रताप सिंह अध्यक्ष सिविल सिद्धार्थ बार एसोसिएशन सिद्धार्थनगर ने भगवान .ष्ण के चित्र को भेंटकर सम्मानित किया इसी क्रम में पंडित अरुणेश तिवारी को अनादि प्रताप सिंह ने,पंडित बृजबिहारी पाण्डेय को रश्मि सिंह ने, पंडित राघवेंद्र द्विवेदी को अशोक प्रताप सिंह, पंडित राधेश्याम शुक्ला को

अमेय प्रताप सिंह, अम्बरीष चतुर्वेदी को रिधान प्रताप सिंह ने, पंडित मुरलीधर मिश्रा को पटेश्वरी सिंह ने भगवान .ष्ण के चित्र से सम्मानित किया। कथा व्यास ने श्रीमद्भागवत कथा का भाष्य करते हुए कहा कि ष्यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतरू। अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। ।जब–जब धर्म की हानि होती है तो धर्म की रक्षा करने स्वयं भगवान को आना पड़ता है और धर्म की रक्षा करना पड़ता है। आज हम उस पीढ़ी के सौभाग्यशाली हैं जो अयोध्या धाम में राममंदिर के निर्माण होते और पूजन करते देख रहे हैं इसपर हिंद समाज तथा प्रत्येक भारतीय को इस बात पर गर्व करना चाहिए। कल्पना करें कि आक्रांता आकर लूटपाट करके ही नहीं जाते थे वे भारत की संस्ति को नष्ट करने के लिए मंदिरों, विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों को समाप्त कर देते थे अब सभी भारतवासियों को सावधान व एकजुट रहना चाहिए। कार्यक्रम में सिद्धार्थनगर से पधारे भूपेन्द्र सिंह बघेल एडवोकेट व राजेश श्रीवास्तव एडवोकेट को भगवान .ष्ण के चित्र से सम्मानित किया गया। कथा में सर्वश्री सुरेन्द्र शुक्ला,फेरी गौड़,मुनेसर, बहादुर, भूमी,शारदा, कपिल देव तिवारी, दीनानाथ तिवारी, प्रसाद हरिजन, बनवारी हरिजन, बैकुंठ तिवारी,रंजय तिवारी,सिमिरता साहनी, बुद्धू चौधरी, फौजदार, विश्वबंधु, फूलचंद, मिलन चौरसिया, मुनिराम, कासे चौधरी, अमृत यादव, चिरकुट यादव, सिद्धू, मीरा, चन्द्रावली, बासकली, रामदरश शुक्ला, राम स्वार्थ तिवारी आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

टधिवक्ता विरोध में सड़क पर उतरे , अनैतिक व्यवहार के आरोप को लेकर दो माह से चल रहा कोर्ट बहिष्कार

दैनिक बुद्ध का संदेश

बहराइच। महसी तहसील में तैनात उपजिलाधिकारी एवं ज्वाइंट मजिस्ट्रेट आलोक प्रसाद के खिलाफ अधिवक्ताओं का विरोध निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है। बुधवार दोपहर तहसील परिसर से निकलकर अधिवक्ता सड़कों पर उतरे और SDM के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। शासन–प्रशासन को कई बार पत्र भेजने के बावजूद कार्रवाई न होने से नाराज अधिवक्ता पिछले दो महीनों से न्यायिक कार्य का बहिष्कार कर रहे हैं। तहसील अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष भारत प्रसाद मिश्रा ने आरोप लगाया कि अधिकारी का व्यवहार और कार्यशैली अमर्यादित है तथा उनका मानसिक संतुलन भी ठीक नहीं प्रतीत होता। संघ ने मुख्यमंत्री व गृह सचिव को पत्र भेजकर कैडर के स्थानांतरण की मांग की है। मालूम हो कि हाल ही में तीन होमगार्ड से हुए विवाद को लेकर परशुराम सेना प्रकोष्ठ व होमगार्ड एसोसिएशन ने भी मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेज चुके हैं। अधिवक्ताओं ने चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र ठोस कार्रवाई नहीं हुई तो वे अनिश्चितकालीन धरना शुरू करेंगे। आंदोलन के चलते तहसील में सैकड़ों वाद लंबित हो गए हैं और फरियादियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा।

बदमाश और पुलिस से हुई मुठभेड़, एक बदमाश हुआ घायल तीन किए गए गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश

बहराइच। थाना जरवल रोड क्षेत्र में गोवंश वध की सूचना पर बुधवार तड़के पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ हो गई। बदमाशों द्वारा पुलिस टीम पर फायरिंग किए जाने

के बाद पुलिस ने आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की, जिसमें एक अभियुक्त के पैर में गोली लग गई। मौके से तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया, जबकि एक आरोपी फरार हो गया। पुलिस के अनुसार, 22 जनवरी 2026 की सुबह मुखबिर से सूचना मिली कि ग्राम मुड़ियाडीह के जंगल में कुछ लोग गोवंश का वध कर चुके हैं और मांस लेकर बाहर निकलने वाले हैं। सूचना मिलते ही प्रभारी निरीक्षक जरवल रोड के नेतृत्व में पुलिस टीमकृपे बिंदेश्वरी यादव, उपनिरीक्षक दिनेश कुशवाहा सहित अन्य पुलिसकर्मियों के साथकृमौके पर पहुंची। जंगल मुड़ियाडीह में सुबह लगभग 6रू40 बजे पुलिस टीम को तीन व्यक्ति कटे हुए गोवंश का मांस, बांका व रस्सी के साथ दिखाई दिए। पुलिस को देखते ही आरोपी भागने लगे। पीछा किए जाने पर आरोपियों ने जान से मारने की नीयत से पुलिस पार्टी पर फायरिंग कर दी। पुलिस द्वारा की गई जवाबी फायरिंग में एक अभियुक्त के पैर में गोली लगी, जिसे घेराबंदी कर पकड़ लिया गया। घायल अभियुक्त की पहचान जाफर पुत्र मुश्ताक, निवासी मुड़ियाडीह थाना जरवल रोड के रूप में हुई, जिसे उपचार हेतु सीएचसी जरवल भेजा गया है। पुलिस ने मौके से दो अन्य अभियुक्तकृहकीम पुत्र ताहिर निवासी मुड़ियाडीह तथा रिज़वान पुत्र सैयद निवासी देवपासिया, थाना कटराबाजार, जनपद गोण्डाकृको गिरफ्तार किया है। वहीं एक अन्य अभियुक्त अकबर अली अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया, जिसकी तलाश में दबिशें दी जा रही हैं।

तमंचा, कारतूस व गोवंश का मांस बरामद

पुलिस ने अभियुक्त जाफर के कब्जे से 315 बोर का तमंचा, एक जिंदा कारतूस और एक खोखा कारतूस बरामद किया है। इसके अलावा मौके से कटा हुआ गोवंश का मांस, बांका और रस्सी भी बरामद की गई है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि अभियुक्तों के आपराधिक इतिहास की जानकारी जुटाई जा रही है तथा प्रकरण में गोवध निवारण अधिनियम व अन्य सुसंगत धाराओं में विधिक कार्रवाई की जा रही है। फरार अभियुक्त की गिरफ्तारी के प्रयास तेज कर दिए गए हैं।

इकौना में भव्य हिंदू सम्मेलन आयोजित, अयोध्या से पहुंचीं कवयित्री डॉ. मानसी द्विवेदी

दैनिक बुद्ध का संदेश

श्रावस्ती। इकौना कस्बे के नये रामलीला मैदान में गुरुवार को भव्य हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में अयोध्या धाम से पधारीं प्रसिद्ध कवयित्री एवं शिक्षाविद डॉ. मानसी द्विवेदी तथा विभाग प्रचारक कृष्ण कुमार (बहराइच) ने सहभागिता की। अतिथियों के आगमन पर आयोजकों एवं श्रद्धालुओं द्वारा पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत किया गया। सम्मेलन को संबोधित करते हुए डॉ. मानसी द्विवेदी ने सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक एकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने युवाओं से धर्म, संस्कार और राष्ट्र के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया।

प्रचारक कृष्ण कुमार ने अपने उनके संबोधन के दौरान पूरा ति अत्यंत प्राचीन है, इसी वक्तव्य में कहा कि समाज में परिसर "जय श्रीराम" के नारों कारण इसे सनातन कहा जाता ऊँच–नीच का भेदभाव समाप्त से गूंज उठा। वहीं विभाग है। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक होना चाहिए, तभी हिंदू समाज संघ के संस्थापक डॉ. केशव का समुचित विकास संभव है। बलिराम हेडगेवार के विचारों उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृ को साझा करते हुए कहा कि उदार चरित्र वाले व्यक्ति के लिए संपूर्ण वसुधा एक परिवार के समान होती है। कार्यक्रम में पूर्व सांसद एवं वर्तमान जिला पंचायत अध्यक्ष दद्दन मिश्रा, श्रावस्ती विधायक पं. राम फेरन पाण्डेय, बिन्नू तिवारी, आशुतोष पांडे, सत्य प्रकाश गुप्ता, विवेक कुमार सोनी, अजय जायसवाल, नरेंद्र जायसवाल, रघुपति पांडे, समाजसेविका अर्चना बाजपेई, जितेंद्र कुमार गुप्ता उर्फ अप्पू, वीनू राजपूत, हनुमान प्रसाद सहित बड़ी संख्या में स्थानीय श्रद्धालु, सामाजिक कार्यकर्ता एवं क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद रहा। कार्यक्रम शांतिपूर्ण एवं अनुशासित वातावरण में संपन्न हुआ। सम्मेलन के समापन पर प्रसाद वितरण किया गया।

SIR समाधान में प्रशासन की तत्परता, मिठवल ब्लॉक बना मिसाल

दैनिक बुद्ध का संदेश

मिठवल। विशेष अभियान एसआईआर (SIR) को लेकर आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान के उद्देश्य से दिनांक 22 जनवरी 2026 को मिठवल ब्लॉक परिसर में व्यापक जनसुनवाई एवं समाधान शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न विकास क्षेत्रों से आए महिला एवं पुरुष लाभार्थी, जिन्हें एसआईआर से संबंधित नोटिस जारी किए गए थे, बड़ी संख्या में ब्लॉक परिसर पहुंचे। ब्लॉक परिसर में नाम जोड़ने, त्रुटि सुधार, दस्तावेज सत्यापन एवं नोटिस के निस्तारण की प्रक्रिया को सुचारु रूप से संपन्न कराने के लिए संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी पूरे दिन मुस्तैदी से

लगे रहे। लोगों की समस्याओं को गंभीरता से सुना गया और मौके पर ही यथासंभव समाधान किया गया, जिससे आमजन को बड़ी राहत मिली। इस पूरे अभियान की सबसे अहम बात यह रही कि खंड विकास अधिकारी, मिठवल ने प्रशासनिक जिम्मेदारी और संवेदनशीलता का परिचय देते हुए सुबह 8 बजे से ही कार्यालय में उपस्थित होकर स्वयं जनसमस्याओं की निगरानी की। वे शाम तक लगातार कार्यालय में डटे रहे और एक–एक प्रकरण को देखकर अधीनस्थ अधिकारियों व कर्मचारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश देते रहे, ताकि किसी भी व्यक्ति को अनावश्यक भटकना न पड़े। जनसुनवाई के दौरान कई ऐसे मामलों का भी समाधान किया गया, जिनमें नाम छूटने, विवरण में त्रुटि या दस्तावेज संबंधी समस्याएं सामने आई थीं। ब्लॉक प्रशासन द्वारा की गई इस सक्रिय पहल से लोगों में संतोष और विश्वास देखने को मिला। उपस्थित नागरिकों ने भी कहा कि पहली बार इतनी सुनियोजित व्यवस्था के साथ उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना गया और समयबद्ध निस्तारण हुआ।

पानी टंकी का कार्य अधूरा कार्य दायी संस्था फरार

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। बलरामपुर जिले में हर घर जल जीवन मिशन

द्वारा हर ग्राम पंचायत में पानी टंकी बनाई गई है और पाइप लाइन दौड़ाई गई है जिसमें अधिकतर कार्य अधूरे पड़े हैं कही पानी टंकी आधा बना है तो कही पूरा बना है कही पाइप लाइन बिछाया गया है तो कही वह भी नहीं किया गया है जहां टोटी लग भी गई है वहां जल आपूर्ति अनियमित है इन सभी समस्याओं को दूर करवाने हेतु पूर्व सांसद प्रत्याशी युगल किशोर शुक्ल एडवोकेट ने जिला अधिकारी बलरामपुर को ज्ञापन सौंपा जिसमें विकास खण्ड हर्रैया सतघरवा के ग्राम पंचायत सिरहिया के सिरहिया ग्रामीण पाइप लाइन पेयजल योजना का जिक्र करते हुए बताया कि जल जीवन मिशन के बोर्ड पर कार्य पूर्ण होने की तिथि 24 सितम्बर 2024 दिखाया गया है प्रोजेक्ट की लागत 193. 80 लाख रुपए दिखाया गया फर्म का नाम मेसर्स दारा ईको प्रोटेक्शन जे बी अंकित है इस तरह कार्य साल भर पहले पूरा हो गया है लेकिन पानी टंकी आधा ही बना है कार्य पूरा ही नहीं हुआ जिसका वीडियो अपर जिला अधिकारी को दिखाया,यही स्थिति बलरामपुर जिले में हैं हर घर जल जीवन मिशन को पूरी तरह नजर अंदाज किया जा रहा है ग्रामीण प्रदूषित जल पीने को मजबूर हैं इस समस्या को दूर करवाने हेतु अपर जिला अधिकारी शिव नारायण सिंह को ज्ञापन सौंपा गया इस अवसर पर एडवोकेट ग़यास अहमद खान, आशीष शुक्ला, इरफान, नृपेन्द्र उपाध्याय, विनोद यादव, शोयब अहमद, अभय शुक्ल, सारिक खान, अर्शी, आशीष सिंह गुड्डू, दुर्गा प्रसाद सिंह, संजय पांडे, आशीष सिंह गोलू, प्रभंजन मणि तिवारी, राजेश जायसवाल, दिलीप वर्मा, राजेश वर्मा, अनूप पाण्डेय, अभिषेक मिश्रा, हिमांशु पाण्डे समेत तमाम लोग मौजूद रहे साथ ही एडवोकेट गयाश अहमद ने कहा कि यह समस्या गांव और शहर हर जगह है जल ही जीवन है शुद्ध पेय जल की समस्या हर जगह है।

बीएड के छात्र छात्राओं को योग का दिया प्रशिक्षण

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोन्डा। गोन्डा जनपद में बीएड के छात्र छात्राओं को योग का दिया गया प्रशिक्षण। एलबीएस पीजी कॉलेज के बीएड विभाग में तीन दिवसीय योग शिविर का सम्पंन हुआ।शिविर में योगाचार्य सुधांशु द्विवेदी द्वारा उपस्थित शिक्षकों एवं छात्र छात्राओं को योगाभ्यास करवाया गया साथ ही साथ उसके लाभ के बारे में भी जानकारी दी गई।योगाचार्य सुधांशु द्विवेदी ने उपस्थित समस्त योग साधकों को सूक्ष्म व्यायाम, ताड़ासन, भुजंगासन, तिर्यक– ताड़ासन, वृक्षासन, सूर्य–नमस्कार आदि का अभ्यास करवाया।इसके साथ–साथ समस्त योग साधकों को उचित दिनचर्या, आहार–विहार और षट्कर्म क्रिया की जानकारी भी दी गई। योगाचार्य सुधांशु द्विवेदी ने बताया की षट्कर्म क्रिया से आप सभी अपने शरीर की शुद्धि कर सकते हैं।इस क्रिया के अंतर्गत नेति, कपालभांति, धौति, नौलि, बस्ति और त्राटक क्रिया आती हैं।इस क्रिया से शरीर के सारे अंग को मजबूत होते हैं। कई

रोगों से मुक्ति मिलेगी। टॉक्सिन हटने से हड्डियां और मांसपेशियां मजबूत होती है।योगाचार्य सुधांशु द्विवेदी ने शिविर के अंत में कहा योग हमारे सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी है।इसके नियमित अभ्यास से शरीर के सभी अंग प्रत्यंग पूर्णरुप से बलिष्ठ व निरोगी हो जाते हैं।इसके साथ–साथ हम सभी पूर्ण निरोगी, संस्कारवान, चरित्रवान, बलवान और महान बन जाते है। इसलिए आप सभी नियमित रूप से प्रत्येक दिन सुबह योग और दिन–भर कर्म योग जरूर करें। शिविर में बी एड विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ संदीप श्रीवास्तव, डॉ चमन कौर, लोहान कुमार कल्याणी, प्रतिमा सिंह के साथ साथ बी एड विभाग के सभी छात्र– छात्राएं मौजूद रहे।

ब्लैकआउट विषय पर डीएम की अध्यक्षता में मॉक ड्रिल का किया जायेगा आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोण्डा। उत्तर प्रदेश दिवस–2026 एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के उपलक्ष्य में23 जनवरी, 2026 को ब्लैकआउट विषय पर जिलाधिकारी गोण्डा की अध्यक्षता में मॉक ड्रिल का आयोजन किया जा रहा है जिसमें शाम 6:00 बजे शहीद ए आजम सरदार भगत सिंह इंटर कॉलेज में आयोजित इस मॉक ड्रिल में युद्ध जैसी आपात स्थिति में किस प्रकार जनमानस की सुरक्षा हेतु कार्य किया जाए, इस विषय के ऊपर मॉक ड्रिल का आयोजन किया जाएगा। ब्लैक आउट के संबंध में इस व्यापक मॉक ड्रिल का आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य, आपातकालीन स्थितियों में, विशेष तौर पर ब्लैक आउट की स्थिति में, विभिन्न विभागों के बीच समन्वय और त्वरित प्रतिक्रिया क्षमताओं का परीक्षण करना है। इस अभ्यास के माध्यम से, सुरक्षा के मानकों को सुदृढ़ किया जाएगा और किसी भी अनहोनी से निपटने के लिए तत्परता बढ़ाई जाएगी। ध्इस महत्वपूर्ण मॉक ड्रिल में, पुलिस विभाग, अग्निशमन विभाग, चिकित्सा विभाग, जन सूचना एवं संपर्क विभाग और अन्य सभी संबंधित विभागों के विभागाध्यक्ष सक्रिय रूप से शामिल होंगे। इसके साथ ही, एनसीसी स्काउट गाइड और जनसामान्य द्वारा भी बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया जाएगा, जो इस आयोजन को और भी सार्थक बनाएगा। यह एक महत्वपूर्ण कदम है, जो हमें आने वाली किसी भी चुनौती से निपटने के लिए तैयार करता है।

ग्राम पंचायत बेलवालगुनही में मनरेगा घोटाले की बड़ी साजिश

दैनिक बुद्ध का संदेष/सुशमा मिश्रा

खेसरहा/सिद्धार्थनगर। जनपद सिद्धार्थनगर के विकास खण्ड खेसरहा अन्तर्गत ग्राम पंचायत बेलवालगुनही में मनरेगा घोटाले की बड़ी साजिश उजागर हुई है। ग्राम पंचायत बेलवालगुनहीं में फर्जी हाजिरी लगाकर जिम्मेदार धन हड़पने की तैयारी में हैं, जिसको

लेकर मनरेगा की कार्य परियोजनाओं में भारी अनियमितता हो रही है। आपको बता दें 6 मस्टर रोल में 51 मजदूरों की फर्जी एन्ट्री की जा रही है। ग्राम पंचायत बेलवालगुनहीं में कार्य कोड 3151013012/।ट/ 958486255824168233 कार्य का नाम बेलवालगुनाही में आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण कार्य 4 मास्टर रॉल 35 मजदूर कार्य कराया जा रहा है । और दूसरा कार्य खण्ड विकास अधिकारी के कार्यालय के उत्तर साइड अस्थल पर इंटरलॉकिंग कार्य में 2 मास्टर रोल में 16 मजदूर काम कर रहे है जिसमें उन्हीं मजदूरों का फोटो बार बार अपलोड किया जा रहा है। एक ही मजदूर कहां–कहां पर काम कर रहा है एक मजदूर का फोटो बार–बार क्यों लगाया जा रहा है 51 मजदूर कागज में दिखाई जा रहे हैं लेकिन यानि फोटो से चेहरा मिलाया जाए तो बार–बार जगह पर फोटो अपलोड एक ही लोग का हुआ है। ग्राम पंचायत बेलवालगुनाही के ग्राम सचिव , तकनीकी सहायक व ग्राम प्रधान की मिलीभगत से फर्जी हाजिरी लगाकर सरकारी भुगतान निकालने में लगे हैं।

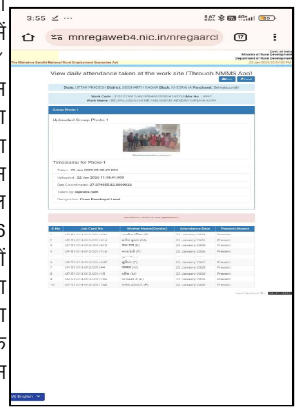

मनरेगा बचाओ अभियान के तहत उतरौला क्षेत्र में चौपाल, सरकार पर कानून कमजोर करने का आरोप

दैनिक बुद्ध का संदेश

उतरौला/बलरामपुर। मनरेगा बचाओ अभियान के क्रम में शुक्रवार 23 जनवरी 2026 को विकासखंड उतरौला के अंतर्गत ग्राम पंचायत मधपुर, गोवर्धनपुर एवं कंचनपुर में चौपाल एवं जनसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीण श्रमिकों ने भाग लिया और मनरेगा से जुड़ी समस्याओं को सामने रखा। चौपाल को संबोधित करते हुए प्रदेश महासचिव एवं पूर्व विधायक धीरेंद्र प्रताप सिंह 'धीरू' ने कहा कि वर्तमान सरकार द्वारा मनरेगा कानून में किए जा रहे लगातार फेरबदल से इस योजना को कमजोर किया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार की मंशा मनरेगा जैसे रोजगार अधिकार कानून को धीरे–धीरे समाप्त करने की है, जिससे ग्रामीण श्रमिकों का अधिकार सुरक्षित नहीं रह जाएगा। ।प्ब्ब् सदस्य एवं पूर्व ब्लॉक प्रमुख राजबहादुर यादव ने कहा कि मनरेगा के तहत काम की उपलब्धता घट रही है और मजदूरी भुगतान में लगातार देरी हो रही है। तकनीकी जटिलताओं और डिजिटल प्रक्रियाओं के कारण गरीब, दलित और वंचित वर्ग के श्रमिकों को सबसे अधिक परेशानी झेलनी पड़ रही है। जिला अध्यक्ष शिवलाकर कोरी ने कहा कि मनरेगा ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यदि इस योजना को कमजोर किया गया तो गांवों में बेरोजगारी, पलायन और गरीबी बढ़ेगी। उन्होंने सरकार से मनरेगा कानून की मूल भावना के अनुरूप श्रमिकों को 100 दिन का रोजगार और समय से भुगतान सुनिश्चित करने की मांग की। चौपाल के दौरान श्रमिकों ने जॉब कार्ड, कार्य की मांग, मजदूरी भुगतान में देरी और प्रशासनिक उदासीनता को लेकर अपनी समस्याएं रखीं। नेताओं ने भरोसा दिलाया कि मनरेगा बचाओ अभियान के माध्यम से श्रमिकों की आवाज को मजबूती से शासन–प्रशासन तक पहुंचाया जाएगा। उक्त अवसर पर भीष्म सिंह, प्रदीप शर्मा, मंजूर कुरैशी, ओम प्रकाश, पवन कुमार, राकेश त्रिपाठी, मारकंडे मिश्र सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस नेता एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

श्रीमद्भागवत कथा के सप्तम दिवस पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, विश्राम दिवस पर भावुक हुए श्रद्धालु

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। चतरा ब्लॉक के ग्राम नरोतमपुर में आयोजित संगीतमयी श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ कथा अपने अंतिम चरण में प्रवेश कर चुकी है। बृहस्पतिवार को कथा के सप्तम दिवस एवं विश्राम दिवस पर कथा स्थल श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर दिखाई दिया। प्रातः से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं भक्तगण कथा श्रवण हेतु उपस्थित रहे। कथा के दौरान जैसे–जैसे भगवान श्री.ष्ण की लीलाओं, भक्त प्रह्लाद, सुदामा चरित्र एवं मोक्ष प्रसंगों का वर्णन हुआ, वैसे–वैसे श्रद्धालु भावविभोर होते चले गए। कथा में प्रतिदिन श्रद्धालुओं की संख्या में निरंतर वृद्धि देखी जा रही है, जिससे क्षेत्र में आध्यात्मिक वातावरण और अधिक प्रबल हुआ है। आज के पावन अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व राज्य मंत्री सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव श्री अरविंद राजभर जी अपने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ भागवत कथा में सम्मिलित हुए। उन्होंने कथा व्यास का आशीर्वाद प्राप्त कर आयोजक सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष मनोज देवा पाण्डेय ने ठाकुर जी के चरणों मे प्रणाम करते हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। आयोजक मंडल ने क्षेत्र के लोगों के भक्ति– भावना की सराहना की तथा कहा कि श्रीमद्भागवत कथा समाज को संस्कार, संयम और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। इस अवसर पर गुरुदेव भगवान मनीषानंद महाराज के अनन्य सेवक, कथा व्यास परम पूज्य श्री सक्षम .ष्ण जी महाराज द्वारा कथा प्रवाह किया जा रहा है।

उनकी ओजस्वी वाणी,सरल व्याख्या और भक्ति रस से परिपूर्ण प्रवचनों ने श्रोताओं के हृदय को गहराई से स्पर्श किया।श्रद्धालु भाव–विभोर होकर "हरि–हरि" और "राधे–राधे" के उद्घोष करते नजर आए। कथा आयोजन समिति एवं ग्रामवासियों ने बताया कि विश्राम दिवस के उपरांत आगामी दिवस में विधिवत पूर्णाहुति एवं भंडारे का आयोजन किया जाएगा, जिसमें क्षेत्र के समस्त श्रद्धालुओं को सादर आमंत्रित किया गया है। यह भागवत कथा न केवल धार्मिक आयोजन है, बल्कि समाज को जोड़ने, संस्कारों को सु.ढ़ करने और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है।उक्त अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष सुभासपा नित्यानंद पाण्डेय,प्रदेश उपाध्यक्ष राजेश यादव,हिंदुस्तान युवा वाहिनी जिलाध्यक्ष विवेकानंद पाण्डेय, सोनमती,अनुराग वियार,विनय मिश्रा,सौरभ कांत पति तिवारी, सत्यप्रकाश पाण्डेय समेत क्षेत्र के विभिन्न गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश दिवस का जनपद में भव्य व दिव्य तरीके से होगा आयोजन–जिलाधिकारी

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने अवगत कराया है कि 23 जनवरी नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की जयन्ती पर पुलिस लाइन में सांय 05:00 बजे मार्क ड्रील का आयोजन किया जायेगा जिसमें आपदा के दौरान किये जाने वाले बचाव के सम्बन्ध में जानकारी दी जायेगी, उन्होने कहा कि 24 जनवरी को उत्तर प्रदेश दिवस–2026 का जनपद में भव्य आयोजन किया जायेगा जिसका जनपद के प्रभारी मंत्री श्री रविन्द्र जायसवा जी द्वारा किया जायेगा उत्तर प्रदेश दिवस के अवस पर सूचना एंव जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी योजनओं से सम्बन्धित तीन दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जायेगा जिसके माध्यम से प्रदेश सरकार द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जायेगी इस दौरान उन्होने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के लाभार्थीयों को प्रसस्ति प्रमाण पत्र का वितरण किया जायेगा। उन्होने कहा कि उत्तर प्रदेश दिवस पर लखनऊ राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर आयोजित कार्यक्रम का जनपद में कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित कार्यक्रम में सजीव प्रसार किया जायेगा इस दौरान विभिन्न विभागों द्वारा समाज कल्याण, महिला कल्याण, दिव्यांग विभाग, .षि, उद्यान, पशुपालन, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन समूह, उपायुक्त उद्योग, रेशम विभाग सहित विभिन्न विभागों की प्रदर्शनी लगायी जायेगी, इस दौरान सांस्.तिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया जायेगा। जनपद के एक उत्पाद एक व्यंजन पर आधारित प्रर्दशनी भी लगायी जायेगी इस दौरान खादी ग्रामोद्योग विभाग, पीएम सूर्य घर से सम्बन्धित प्रर्दशनी लगायी जायेगी।

बसौनी में चल रहे स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़।राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बसौनी में चल रहे तीन दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर का समापन गुरुवार को हुआ। जनपद सिद्धार्थ नगर के भारत स्काउट और गाइड शिविर का निरीक्षण समापन अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्य व शिविर संयोजिका विभा चतुर्वेदी द्वारा किया गया। बच्चो के द्वारा निर्मित टेंट गेट, पकवान, गैजेट आदि का निरिक्षण कर स्काउट गाइड के कार्यों को सराहा। शिविर में प्रशिक्षण दे रहे जिला संगठन आयुक्त स्काउट जनपद सिद्धार्थ नगर अमित कुमार शुक्ल ने अपने सहयोगी विवेक दूबे व श्याम शर्मा के साथ स्काउट गाइड के प्रथम सोपान से संबंधित समस्त विषयों की गहनता से जानकारी दी। अमन गुप्ता, विजय लक्ष्मी, मेराज, रोहन, युवराज ऋषभ, अंजनी, अनस खान, प्रदीप कुमार आदि टोली के बच्चों का सांस्तिक कार्यक्रम को भी सराहा गया। विभा चतुर्वेदी एवं अमित कुमार शुक्ल के नेतृत्व में विद्यालय में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत जागरूकता हेतु पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिला संगठन आयुक्त स्काउट अमित कुमार शुक्ल ने कहा कि प्रशिक्षण की बातों को आत्मसात कर व सीखकर छात्रों केजीवन में बेहतर कार्य करने की प्रेरणा आयेगी। शिविर संयोजिका विभा चतुर्वेदी ने कहा कि इस तरह के प्रशिक्षण से बच्चों के अंदर सर्वांगिण विकास होता है। विषम परिस्थितियों में कुछ कर गुजरने की सीख मिलती है। इस अवसर पर अवसर पर स्काउट मास्टर शशी प्रसाद, मोहम्मद करीम, विनय कुमार वर्मा, अवधेश कुमार, सुबेदार प्रेम यादव पाल आदि लोग मौजूद रहे।

गौ तस्करों व पुलिस की मुठभेड़ में, 02 नफर गौ तस्कर घायल

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन में तथा अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय अनिल कुमार एवं क्षेत्राधिकारी घोरावल राहुल पाण्डेय के पर्यवेक्षण में जनपद में गौ–तस्करी, अन्तर्राज्यीय गौ–तस्करों तथा वांछित/पुरस्कार घोषित अभियुक्तों की गिरतारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में 22.01.2026 को थाना घोरावल, करमा व शाहगंज पुलिस को जरिये मुखबिर सूचना प्राप्त हुई कि कुछ पशु तस्कर 01 पिकअप(बिना नम्बर प्लेट के) से कुछ गौवंश को मध्य प्रदेश वार्डर(थाना घोरावल क्षेत्र) से बिहार वध करने हेतु ले जा रहे है। उक्त सूचना पर थाना घोरावल, करमा व शाहगंज पुलिस टीम द्वारा अलग–अलग टीमे बनाकर तत्काल मौके पर पहुँचकर खाखे मोड़ नहर पुलिया चौराहा के पास घेराबन्दी की गई। जिसमें खुद को घिरता देखकर अपराधियों द्वारा भागने के प्रयास में पिकअप से एक मुख्य आरक्षी को टक्कर मारकर घायल कर दिया गया एवं भागने

के दौरान पुलिस बल के उपर फायरिंग शुरु कर दी गई, जिसमें पुलिस टीम द्वारा आत्मरक्षार्थ जवाबी कार्यवाही करते हुए 02 अभियुक्तगण 01. चालक सिद्धनाथ खरवार पुत्र सुमेर सिंह निवासी ग्राम अमहरा, थाना अधौरा जिला कैमूर, बिहार उम्र करीब 29 वर्ष एवं 02. वाहन मालिक ओमप्रकाश यादव पुत्र रामजनम यादव निवासी चौनपुर, भभुआ बिहार उम्र करीब 30 वर्ष के पैर में गोली लगने से घायल/गिरतार हो गये व कब्जे से 01 पिकअप वाहन में 09 राशि गौवंश(एक मृतक अवस्था में), 02 अदद अवैध तमंचा .315 बोर, 02 अदद जिन्दा कारतूस .315 बोर व 02 अदद खोखा कारतूस .315 बोर बरामद किया गया । घायल अभियुक्तों एवं घायल मुख्य आरक्षी राजीव कुमार को इलाज हेतु सीएचसी घोरावल पुलिस अभिरक्षा में भेजा गया है। उक्त बरामदगी व गिरतारी के आधार पर थाना घोरावल पर सुसंगत धाराओं में अभियोग पंजी.त किया जा रहा है। अग्रेतर विधिक कार्यवाही प्रचलित है। गिरतार अभियुक्तों द्वारा पूछताछ में बताया गया कि हम कैमूर बिहार के रहने वाले है। हम लोगों का एक गिरोह है जो काफी दिनों से गौ तस्करी का काम करते है। हम लोग आज भी इन 09 राशि गौवंशों को मध्य प्रदेश के बॉर्डर(थाना घोरावल क्षेत्र) के पास से लादे थे तथा नौगढ़ होते हुए बिहार ले जाते थे। इसके पूर्व में भी कई बार हम लोग इसी योजना के तहत ले चुके है । वध के लिए बिहार से पश्चिम बंगाल भेजा जाता है ।

जनेश्वर मिश्र के विचारों से प्रेरणा ले युवा: महेन्द्रनाथ यादव

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता विचारक जनेश्वर मिश्र को उनकी 16 वीं पुण्यतिथि पर याद किया गया। गुरूवार को सपा कार्यालय पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि समाजवादी आन्दोलन के योद्धा जनेश्वर मिश्र का योगदान सदैव याद किया जायेगा। कहा कि डॉ. लोहिया के विचारों को आत्मसात कर छोटे लोहिया जनेश्वर मिश्र ने तमाम युवाओं को समाजवादी संघर्ष व विचार से जोड़ा और राजनीतिक सक्रियता प्रदान की। युवा पीढी जनेश्वर मिश्र के विचारों से प्रेरणा ले और आगामी त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव, विधानसभा के चुनाव में जीत सुनिश्चित करने के लिये

पूरी ताकत से जुट जाय। पूर्व विधायक राजमणि पाण्डेय, विधायक राजेन्द्र चौधरी, कविन्द्र चौधरी 'अतुल', पूर्व मंत्री श्रीपति सिंह, दयाशंकर मिश्र, मो. स्वालेह, समीर चौधरी, मो. सलीम, जावेद पिण्डारी, हरीश गौतम, रविन्द्र यादव, गुलाम गौस, संजय गौतम, सुरेन्द्र सिंह छोटे, राजेन्द्र चौरसिया, जोखूलाल यादव आदि ने कहा कि डॉ. लोहिया के विचारों के लिए संघर्ष करने वाले लोक बंधु राज नारायण को भी जनेश्वर मिश्र अपना नेता मानते थे। प्रखर वक्ता जनेश्वर मिश्र उर्फ छोटे लोहिया समाजवाद की चलती फिरती पाठशाला थे। वक्ताओं ने जनेश्वर मिश्र के योगदान को रेखांकित करते हुये कहा कि वह कार्यकर्ताओ और साथियों को सम्मान देने में सदा आगे रहे। छोटे लोहिया का स्पष्ट कहना था कि मुद्दे जनसंपर्क व संघर्ष से बनते हैं। छोटे लोहिया आज हमारे बीच नहीं है, उनके विचार व संघर्ष समाजवादी विचारों पर चिंतन करने वालों, राजनीति करने वालों के लिए सदैव प्रेरक रहेंगे। छोटे लोहिया जनेश्वर मिश्र को उनके पुण्य तिथि पर याद करने वालों में गुलाब सोनकर,हनुमान प्रसाद चौधरी, अरविन्द सोनकर, जर्सी यादव, नित्यराम चौधरी, घनश्याम यादव, दिनेश तिवारी, प्रमोद यादव, सहाबुद्दीन अंसारी, देवेन्द्रनाथ श्रीवास्तव, मो. युनूस आलम, हनुमान प्रसाद गौड़, रणजीत यादव, रामभवन यादव, हिमांशु सिंह, प्रदीप यादव मुलायम, नीलू सिंह, मंशाराम कन्नौजिया, राहुल सिंह, कक्कू शुक्ल, रमेश कुमार गौतम, तूफानी यादव, लालमन यादव, रविकान्त निषाद, मो. फारूक, भोला पाण्डेय, गौरीशंकर यादव, वैजनाथ शर्मा, मधुबन शर्मा, विजेन्द्र जायसवाल आदि शामिल रहे।

आईजीआरएस पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का निस्तारण ससमय किया जाये–सुनिश्चित–जिलाधिकारी

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह की अध्यक्षता में बृहस्पतिवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर प्राप्त होने वाली जन शिकायतों के त्वरित एवं गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण हेतु जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ ही अन्य सम्बन्धित अधिकारियों के उपस्थिति में बैठक की गयी। बैठक में आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में अधिक से संख्या में असंतुष्ट फिडबैक पाये जाने पर जिलाधिकारी ने समाज कल्याण अधिकारी, प्राचार्य स्वशासी राज्य चिकित्सालय मेडिकल कालेज, तहसीलदार घोरावल, जिला

अबकारी अधिकारी को स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश दियें। अधिकारियों द्वारा शिकायतकर्ताओं द्वारा की गयी शिकायतों का गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण नहीं किया गया था। इस दौरान जिलाधिकारी ने उपस्थित अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रदेश के मा0 मुख्यमंत्री जी की मंशा है कि जनता दर्शन, तहसील दिवस, आई0जी0आर0एस0, थाना समाधान दिवस में प्राप्त होने वाली शिकायतों का निस्तारण ससमय व गुणवत्ता पूर्ण तरीके से सुनिश्चित किया जाये, जिससे कि जन मानस की समस्याओं का ससमय निस्तारण हो सकें। उन्होंने कहा कि आई0जी0आर0एस0 पोर्टल पर प्राप्त होने वाली शिकायातों के निस्तारण हेतु सम्बन्धित अधिकारी स्थल पर जाकर शिकायतकर्ता का फीडबैक प्राप्त करते हुए शिकायतों का गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण करें, निस्तारण के दौरान स्थल पर कार्यवाही सम्बन्धी जी0पी0एस0 फोटोग्रास अपलोड करना सुनिश्चित करें, सम्बन्धित अधिकारी प्रतिदिन आई0जी0आर0एस0 पोर्टल को लागिन करते हुए प्राप्त होने वाली शिकायतों का फीडबैक भी प्राप्त करते रहें और प्राप्त शिकायतों का निस्तारण भी ससमय कराना सुनिश्चित करें, अंतिम दिवस में शिकायतों के निस्तारण करने वाले अधिकारियों के विरूद्ध कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। इस दौरान उप जिलाधिकारी सदर उत्कर्ष द्विवेदी, मुख्य चिकित्साधिकारी पी0के0 राय, जिला विकास अधिकारी हेमन्त कुमार सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 पंकज कुमार राय, जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण, सहित जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहें।

जनसुनवाई शिविर का आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

करमा/सोनभद्र। विकास खण्ड करमा परिसर एवं बी, आर, सी, केकराही परिसर में गुरुवार को मतदाताओं को पूर्व में जारी किए गए नोटिस के निस्तारण के लिए जन सुनवाई शिविर का आयोजन किया गया । जिसमे दर्जनों गांवों के लोगों द्वारा एस, आई, आर की समस्या के निस्तारण के लिए आवश्यक दस्ता वेज जमा किया गया और समस्याओं का निस्तारण किया गया। खण्ड विकास अधिकारी गुरुशरन श्रीवास्तव ने बताया कि छूटे हुए लोग शुक्रवार को भी जन सुनवाई में आकर समस्या का निवारण करवा सकते हैं।

दो दिवसीय सैनिक भर्ती शिविर का आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

करमा/सोनभद्र। विकास खण्ड करमा परिसर में एस, आई, एस ट्रेनिंग सेंटर सिंगरौली द्वारा गुरुवार को दो दिवसीय सैनिक भर्ती शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे पहले दिन 30 सुरक्षा जवानो का चयन किया गया। इसके साथ ही शुक्रवार को भी शिविर प्रातरू 11 बजे से शाम 05 बजे तक आयोजित किया जायेगा ।शिविर में चयनित युवाओं को सिंगरौली में 1 माह के प्रशिक्षण होगा । खण्ड विकास अधिकारी गुरुशरन श्रीवास्तव ने बताया कि इच्छुक बेरोजगार जिनकी योग्यता 10वीं पास है, उम्र 19 से 40 वर्ष है वे शिविर में आकर लाभ उठाएं।

पीड़िता का फ्रॉड हुये रुपये कराए वापस

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा द्वारा साइबर अपराधियो के विरूद्ध चलाये जा रहे विशेष अभियान तथा अपर पुलिस अधीक्षक श्री अनिल कुमार के दिशा–निर्देशन में थाना प्रभारी साइबर क्राइम पुलिस थाना जनपद सोनभद्र के कुशल नेतृत्व में थाना पिपरी साइबर टीम के द्वारा आवेदिका सुधा देवी पत्नी गनेश सिंह निवासिनी वार्ड न0 07 हिण्डालको कॉलोनी रेनूकूट थाना पिपरी जनपद सोनभद्र, के साथ किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा फ्रॉड कर के धनराशि को ट्रांसफर करा लिया गया था। जिसके क्रम में त्वरित कार्यवाही करते हुये बैंक से पत्राचार करके फ्रॉड हुई धनराशि को होल्ड कराकर निर्धारित प्रारुप में नोटिस देकर कुल 20000/– रुपये को आवेदिक सुधा देवी के मूल खाते में सफलतापुर्वक वापस कराया गया। जिस पर आवेदिका द्वारा पुलिस अधीक्षक , अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय के साथ साइबर क्राइम पुलिस थाना पिपरी के अधिकारी/कर्मचारीगण की भूरी–भूरी प्रशंसा की गयी।

पशु क्रूरता अधिनियम से सम्बन्धित वांछित वारंटी अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय अनिल कुमार तथा क्षेत्राधिकारी ओबरा श्री अमित कुमार के कुशल मार्गदर्शन/पर्यवेक्षण में वांछित/वारंटी अभियुक्तों की गिरतारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में 22.01.2026 को प्रभारी निरीक्षक थाना हाथीनाला के नेतृत्व में गठित तलाश/वारंटी टीम द्वारा वांछित वारंटी अभियुक्त को गिरतार किया गया। उक्त अभियान के अन्तर्गत मु0अ0सं0 13/2022, धारा 3/5ए/8 गोवध निवारण अधिनियम व 11 पशु क्रूरता अधिनियम, थाना हाथीनाला, जनपद सोनभद्र से सम्बन्धित वांछित/वारंटी अभियुक्त जगशाह सिंह पुत्र शिवराज सिंह, निवासी ग्राम बड़गड़, थाना मोरवा, जिला सिंगरौली, उम्र लगभग 50 वर्ष, को नियमानुसार गिरतार कर न्यायालय भेजा गया।

स्थापना दिवस पर भजन कीर्तन व भंडारे का आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। अयोध्या के राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के स्थापना दिवस पर बेलवाडांडी स्थित हनुमान मंदिर पर भजन कीर्तन व विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर लोक कल्याण की मंगल कामना की। आपको बता दें बेलवाडांडी का हनुमान मन्दिर भक्तों की आस्था का केन्द्र बनता जा रहा है। यहां आये दिन भजन कीर्तन से वातावरण गुंजायमान रहता है। पंकज श्रीवास्तव, अमित श्रीवास्तव कक्कू ने कहा राममंदिर में प्राण प्रतिष्ठा सनातन भारत की ऐतिहासिक उपलब्धि है। हर भारतीय की धर्म में आस्था होनी चाहिये। धर्म ही हमारा मार्गदर्शक है, जिसकी बुनियाद पर हमारा सनातन भारत खड़ा है। विनोद कुमार मिश्र पुरोहित, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, सोनू श्रीवास्तव, मुकेश श्रीवास्तव, यशु श्रीवास्तव, अंशुल श्रीवास्तव, अंशुमान, अंश श्रीवास्तव, समर्थ रामदयाल, अनुभव श्रीवास्तव, सत्यम श्रीवास्तव सहित समस्त क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

बच्चों के अंदर देश प्रेम व अनुशासन का पाठ सिखाता है स्काउट गाइड – राजेश

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। भारत स्काउट और गाइड उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित तीन दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर का समापन यूनीक साइंस एकेडमी में मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रधानाचार्य राजेश कुमार श्रीवास्तव ने बच्चों द्वारा बनाए गए टेंट का निरीक्षण करते हुए किया, मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा इस प्रशिक्षण से बच्चों के अंदर देश प्रेम, राष्ट्र एकता के साथ साथ अनुशासन का पाठ सीखा जा सकता है। स्काउट आदर्श मिश्रा ट्रेनिंग काउंसलर स्काउट मंगलेश अग्रहरि ने बच्चों को तीसरे दिन स्काउट गाइड टेंट निर्माण, पुल निर्माण, गैजेट निर्माण, पाक विद्या, आदि की जानकारी दी, विद्यालय वरिष्ठ शिक्षक दुर्गेश कुमार ने बच्चों को बताया कि इस प्रशिक्षण से आपके जीवन में आने वाली परेशानियों को सहजता से दूर किया जा सकता है। स्काउट मास्टर बिंदुसार सिंह ने आए हुए अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम की समापन की घोषणा की। कार्यक्रम में स्वेता श्रीवास्तव, दिव्या सिंह, अंशिका जायसवाल, किरन सिंह, मानसी सिंह, अखिलेश शुक्ला, राकेश सुमन त्रिपाठी, मृदुला श्रीवास्तव, रिया पांडेय, मीनाक्षी, सौम्या, कौशल, गौरव, हिमांशु, भावना श्रीवास्तव, शिवम आदि उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक:- श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स, ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट-हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद-सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं मकान नं. 203 निकट बी.एस.एन.एल. टावर खलवा मोहल्ला, नगर पालिका परिषद बलरामपुर, जनपद- बलरामपुर, उ0प्र0-271201 से प्रकाशित । आर.एन.आई. नं0- UPHIN/2021/86502 । सम्पादक- राजेश कुमार शर्मा

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद-सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

रानी मुखर्जी की बहुप्रतीक्षित फिल्म मर्दानी 3 का पहला गाना बब्बर शेरनी जारी, गाने में दिखा अभिनेत्री दिलेर अंदाज

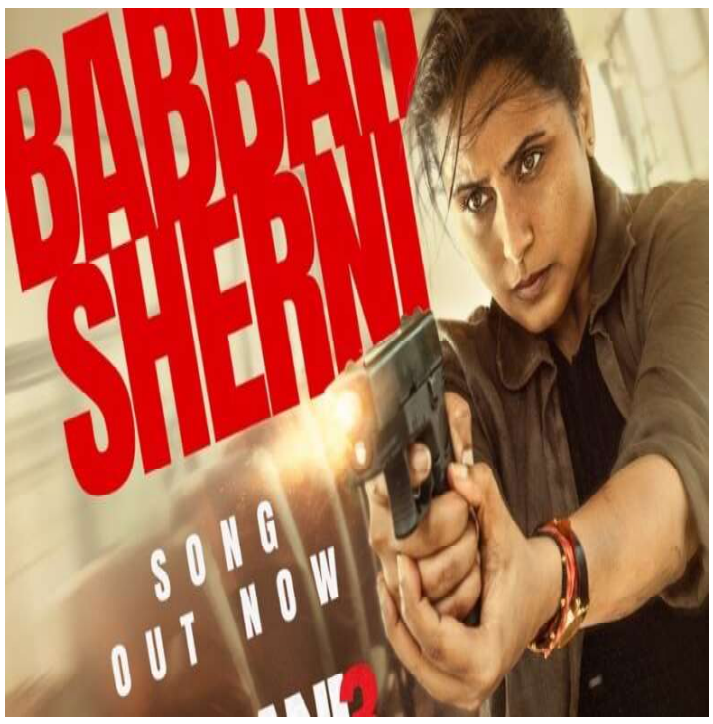

बॉलीवुड अभिनेत्री रानी मुखर्जी इन दिनों मर्दानी 3 को लेकर खूब चर्चा बटोर रही हैं। यशराज फिल्म्स के बैनर तले बनी इस फिल्म का ट्रेलर जारी हो चुका है जिसे फैंस के अलावा फिल्मों सितारों से भी वाहवाही मिली। पुलिस अधिकारी शिवानी शिवाजी रॉय के दमदार किरदार में रानी को दोबारा देखने के लिए लोग उत्साहित हैं। इस बीच, निर्माताओं ने फिल्म का पहला गाना बब्बर शेरनी जारी किया जिसमें अभिनेत्री का दिलेर अंदाज देखने को मिला है।

बब्बर शेरनी गाना यशराज फिल्म्स के यूट्यूब चौनल पर जारी हुआ जिसे आवाज सार्थक कल्यानी ने दी है, जबकि लिरिक्स श्रुति शुक्ला ने लिखे हैं। निर्माताओं ने कुछ अलग न करते हुए गाने में फिल्म के विजुअल्स का इस्तेमाल किया है जिसमें रानी के अदम्य साहस और भावनाओं की झलक साफ नजर आती है। श्बब्बर शेरनीय शीर्षक से आया यह गीत शिवानी की प्रभावशाली आभा को और मजबूत करता है और समाज की महिलाओं को श्बब्बर शेरनीय के रूप में सलाम करता है। इस गीत को सार्थक कल्याणी ने कंपोज, प्रोड्यूस और अरेंज किया है, इसके बोल श्रुति शुक्ला ने लिखे हैं और इसमें डी एमसी का तीखा और प्रभावशाली रैप सेगमेंट भी शामिल है।

गीत के बारे में बात करते हुए रानी मुखर्जी ने कहा, श्बब्बर शेरनीय फिल्म की आत्मा का एक सशक्त ध्वन्यात्मक रूप है। यह मर्दानी की अडिग भावना को पूरी ताकत के साथ दर्शाता है और हमारे समाज की महिलाओं को श्बब्बर शेरनीय के रूप में सम्मानित करता है। यह गीत कच्ची सच्चाई, दृढ़ संकल्प और अडिग साहस से भरा हुआ है कृ ठीक वैसे ही जैसे शिवानी शिवाजी रॉय का व्यक्तित्व। श्बब्बर शेरनीय एक महिला की ताकघ्त, उसके संकल्प और समाज में बदलाव लाने की उसकी जिद को सलाम है। न्याय की अडिग भावना से प्रेरित यह गीत उनकी निडरता और फौलादी इरादों को दर्शाता है और उन तमाम महिलाओं का उत्सव मनाता है जो मुश्किल हालात में भी पीछे हटने से इनकार करती हैं।

उन्होंने आगे कहा, यह सिर्फ एक प्रमोशनल ट्रैक नहीं है, बल्कि शिवानी शिवाजी रॉय के किरदार का भावनात्मक और वैचारिक विस्तार है। यह गीत ताकघ्त, साहस और शांत आक्रोश को एक ऐसे आह्वान में ढालता है, जो इस बात को परिभाषित करता है कि असल मायनों में श्मर्दानीय होने का अर्थ क्या है।

93 लापता लड़कियों को समय के खिलाफ जंग लड़ते हुए बचाने की इस कहानी को लेकर दर्शकों की उत्सुकता लगातार बढ़ रही है।

मर्दानी 3 आयुष गुप्ता द्वारा लिखी गई है और इसका निर्देशन अभिराज मिनवाला ने किया है। फिल्म 30 जनवरी, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

डेटिंग के लिए प्रोफेशन नहीं, इंसान मायने रखता है : शिवांगी जोशी

टेलीविजन की मशहूर अभिनेत्री शिवांगी जोशी अपने शानदार अभिनय से दर्शकों के दिलों में खास जगह रखती हैं। उन्होंने हाल ही में डेटिंग और रिलेशनशिप को लेकर अपने विचार व्यक्त किए। अभिनेत्री ने हाल ही में बालाजी टेलीफिल्म्स के पॉपुलर पॉडकास्ट

ऑनेस्टली, व्हाई नॉट? में स्पेशल गेस्ट के तौर पर शिरकत की थी। इस शो में होस्ट ने अभिनेत्री से मनोरंजन जगत के लोगों को डेट करने के बारे में सवाल किया था। होस्ट ने पूछा था कि क्या वे इंडस्ट्री के लड़कों को डेट करना पसंद करेंगी या नहीं। इस सवाल का जवाब देते हुए अभिनेत्री ने साफ तरीके से कहा कि उनके लिए किसी भी रिश्ते की नींव इंसानियत, आदर और आपसी समझ पर टिकी होना जरूरी है। उन्होंने कहा, मुझे नहीं लगता कि प्यार का किसी इंडस्ट्री या प्रोफेशन से कोई लेना–देना है। यह पूरी तरह से इंसान पर निर्भर करता है। असल में ये सब सम्मान, समझदारी, सच्चा प्यार और अच्छे मूल्यों पर आधारित होता है। इसलिए किसी का प्रोफेशन मेरे लिए मायने नहीं रखता है। हालांकि, अभिनेत्री अपनी लव लाइफ को लेकर काफी सुर्खियों में रहती हैं। उनका नाम मोहसिन खान और कुशाल टंडन के साथ जोड़ा जाता है। शिवांगी ने अपने करियर में टीवी से लेकर ओटीटी प्लेटफॉर्म तक में काम किया है, लेकिन आज भी फैंस उन्हें ये रिश्ता क्या कहलाता है से पहचानते हैं। इस शो में वे नायरा के किरदार में नजर आई थीं। शो में उनके अपोजिट मोहसिन खान नजर आए थे। कहा जाता है कि शो के दौरान दोनों रिलेशन में थे। हालांकि, फिर उन्होंने ब्रेकअप कर लिया था, लेकिन दोनों ने कभी भी अपने ब्रेकअप को लेकर बात नहीं की। इसके बाद अभिनेत्री टीवी सीरियल बरसातें में नजर आई थीं। इसमें उनके साथ कुशाल टंडन थे। शो के दौरान दोनों के बीच दोस्ती हुई और बाद में प्यार में बदल गई थी। वहीं, कुछ समय बाद उनके ब्रेकअप की खबरें सामने आईं। इस बात की पुष्टि खुद कुशाल ने सोशल मीडिया पर की थी, यह बताते हुए कि वे अब साथ नहीं हैं और उनकी सोच नहीं मिलती थी।

बॉर्डर 2 को मिला यू/ए 13 सर्टिफिकेट, सेंसर बोर्ड ने नहीं लगाया एक भी कट, 3.16 घंटे फिल्म का रनटाइम

बॉर्डर 2 की रिलीज का काउंटडाउन खत्म होने वाला है. फिल्म की रिलीज में अब बस दो दिन ही बचे हैं और आने वाली 23 जनवरी को फिल्म सिनेमाघरों में चल पड़ेगी. पूरा देश इस फिल्म

को देखने के लिए बेताब है. सोशल मीडिया पर इस बात का पक्का सबूत मिल चुका है. सोशल मीडिया पर फिल्म को लेकर शानदार क्रेज नजर आ रहा है. वहीं, फिल्म अब सेंसर बोर्ड से भी बिना किसी कट के पास हो चुकी है. साथ ही फिल्म का रनटाइम भी सामन आ चुका है. बॉर्डर 2 को सेंसर बोर्ड ने यूध्ए सर्टिफिकेट दिया है. खास बात यह है कि फिल्म को एक भी कट लगाए बिना पास किया गया है. फिल्म बॉर्डर 2 का रनटाइम 3.16 घंटे का है. रिपोर्ट्स की मानें तो सेंसर बोर्ड ने फिल्म में एक भी कट नहीं लगाया है. फिल्म में युद्ध की बारीकियों, भावनाओं और सैनिकों के बलिदान का विस्तार से देखने को मिलेगा. सेंसर बोर्ड ने फिल्म को यूध्ए 13 सर्टिफिकेट दिया है, जिसका मतलब है कि 13 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए पेरेंट्स गाइडेंस जरूरी है, क्योंकि फिल्म में इंटेंस वॉर सीक्वेंस और इमोशनल सीन भी हैं. फिल्म की कहानी के बारे में बात करें तो यह भारत और पाकिस्तान के बीच 1971 में हुई लड़ाई पर बेस्ड है. इसमें में सनी देओल लेफ्टिनेंट कर्नल फतेह सिंह कालेर (6 सिख रेजिमेंट), वरुण धवन मेजर होशियार सिंह दहिया (पीवीसी, द ग्रेनेडियर्स), दिलजीत दोसांझ फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों (पीवीसी, इंडियन एयर फोर्स, नंबर 18 स्क्वाड्रन), अहान शेट्टी लेफ्टिनेंट कमांडर एम.एस. रावत (इंडियन नेवी, ढ़ढहस् खुकरी) के रोल में नजर आएंगे. फीमेल लीड रोल में मोना सिंह, मेधा राणा, सोनम बाजवा और अन्या सिंह हैं. फिल्म 23 जनवरी को रिलीज होगी, लेकिन एडवांस बुकिंग बता रही है कि फिल्म ओपनिंग डे पर बॉक्स ऑफिस पर बवाल मचाने वाली है. फिल्म सैकनिल्क की मानें तो बॉर्डर 2 ने बुधवार दोपहर 12.30 बज तक 9309 शोज के लिए 108441 टिकट सेल कर 3.48 करोड़ रुपये कमा लिए हैं और ब्लॉक सीट की कमाई का आंकड़ा 6.73 करोड़ रुपये हो गया है.

ओ रोमियो का ट्रेलर रिलीज, मोहब्बत बड़ी महंगी.. शाहिद कपूर और अविनाश तिवारी के बीच छिड़ी जंग, फंसीं तृप्ति डिमरी

शाहिद कपूर, तृप्ति डिमरी, अविनाश तिवारी, नाना पाटेकर और फरीदा जलाल स्टारर क्राइम

एक्शन ड्रामा ओ रोमियो का कत्लेआम करने वाला ट्रेलर रिलीज हो गया है. शाहिद कपूर और विशाल भारद्वाज एक बार फिर सिल्वर स्क्रीन पर धमाका करने के लिए तैयार हैं. ट्रेलर दर्शकों में फिल्म देखने का महौल पैदा करने वाला है. शाहिद कपूर का सनकी अंदाज और फिल्म के विलेन अविनाश तिवारी का एंगर ट्रेलर को रिच कर रहा है. दूसरी तरफ शाहिद और तृप्ति के बीच के नोकझोक वाली लव केमिस्ट्री भी फिल्म देखने पर मजबूर करने का काम कर रही है.

3.08 मिनट का ओ रोमियो का ट्रेलर रोमांटिक अंदाज से शुरू होता है और देखते ही देखते मारकाट और मारदाड़ में बदल जाता है. हर दूसरे सीन में शाहिद कपूर अपने दुश्मनों की गर्दन पर उस्तरा चलाते दिख रहे हैं. वहीं, नाना पाटेकर बंदूक लेकर शाहिद कपूर के पीछे पड़े हैं. तीसने प्लॉट में शाहिद कपूर का तृप्ति डिमरी के प्रति जबरन प्यार भी नजर आ रहा है. ट्रेलर में कुछ डायलॉग इंप्रेस करते हैं और गालियां भी सुनने को मिल रही है. शाहिद कपूर अपने किरदार में खूनमखान नजर आ रहे हैं और अविनाश तिवारी किसी बदले की आग में जलते दिख रहे हैं. अब शाहिद और अविनाशके बीच यह प्यार को लेकर जंग है या फिर बदमाशी की, यह तो फिल्म में देखने के बाद पता चलेगा.

फिल्म का निर्देशन कर रहे हैं सिनेमा के मास्टर स्टोरीटेलर विशाल भारद्वाज, जिनके साथ शाहिद कपूर की जोड़ी पहले भी श्हैदरच्च और श्कमीनेच्च जैसी यादगार फिल्में दे चुकी है. फिल्म में शाहिद कपूर के साथ तृप्ति डिमरी भी अहम भूमिका में नजर आएंगी, जिनकी मौजूदगी कहानी को और दिलचस्प बनाने का वादा करती है. इस फिल्म को नाडियाडवाला ग्रैंडसन एंटरटेनमेंट प्रोड्यूस कर रहा है और इसे वैलेंटाइन वीक, यानी 13 फरवरी 2026 को रिलीज किया जाएगा. ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि श्ओचरोमियोच्च सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि दर्शकों के लिए एक इंटेंस, अनप्रिडिक्टेबल और पैशनेट सिनेमैटिक जर्नी साबित होने वाली है.

पथरी से राहत दिलाने में मदद करता है सर्पासन, ऐसे करता है काम

डिजिटल दुनिया में मोबाइल, लैपटॉप और लंबे समय तक कुर्सी पर बैठे रहने की आदत ने हमारी दिनचर्या को सुस्त बना दिया है। नतीजा यह है कि शरीर के अंदरूनी अंग ठीक से काम नहीं कर पाते, मांसपेशियां कमजोर होने लगती हैं और कई बीमारियां जन्म लेने लगती हैं। इन्हीं समस्याओं में एक बड़ी परेशानी है किडनी से जुड़ी दिक्कतें, खासकर पथरी की। गलत खान–पान, कम पानी पीना और शारीरिक गतिविधियों की कमी के कारण आज कम उम्र के लोग भी पथरी की समस्या से जूझ रहे हैं। जब किडनी में पथरी होती है, तो शरीर के अंदर जमा गंदगी बाहर नहीं निकल पाती। इससे तेज दर्द, जलन और कई बार संक्रमण तक हो जाता है। आमतौर पर लोग दवाइयों या ऑपरेशन का सहारा लेते हैं, लेकिन अगर समय रहते जीवनशैली सुधारी जाए, तो इस परेशानी से काफी हद तक बचा जा सकता है। योग इसी दिशा में एक सरल और प्राकृतिक उपाय है। योग शरीर को बिना नुकसान पहुंचाए अंदर से मजबूत करता है। इन्हीं योगासनों में एक प्रभावी आसन है सर्पासन, जिसे भुजंगासन या कोबरा पोज भी कहा जाता है।

सर्पासन दिखने में जितना आसान है, असर में उतना ही गहरा है। यह आसन शरीर के निचले हिस्से, खासकर पेट और कमर के आसपास के अंगों पर सीधा प्रभाव डालता है। जब हम सर्पासन करते हैं, तो पेट के बल लेटकर शरीर को ऊपर उठाया जाता है। इस दौरान पेट, कमर और रीढ़ की हड्डी पर हल्का दबाव पड़ता है। यही दबाव किडनी के लिए फायदेमंद साबित होता है। इससे किडनी के आसपास की मांसपेशियां सक्रिय होती हैं और वहां जमा विषैले तत्व धीरे–धीरे बाहर निकलने की प्रक्रिया तेज होती है।

पथरी बनने की एक बड़ी वजह यह भी है कि किडनी ठीक से साफ नहीं हो पाती। सर्पासन करने से शरीर के अंदर रक्त संचार बेहतर होता है। जब खून का बहाव तेज और सही दिशा में होता है, तो किडनी को ज्यादा ऑक्सीजन और पोषण मिलता है। इससे किडनी अपनी सफाई का काम अच्छे से कर पाती है। नियमित अभ्यास से छोटी पथरी धीरे–धीरे टूटकर पेशाब के रास्ते बाहर निकलने में मदद मिल सकती है। यही वजह है कि योग विशेषज्ञ पथरी के शुरुआती चरण में सर्पासन को काफी उपयोगी मानते हैं।

सिर्फ पथरी ही नहीं, सर्पासन रीढ़ की हड्डी को भी मजबूती देता है। आजकल कमर और पीठ दर्द आम समस्या बन गई है। इस आसन से पीठ की मांसपेशियां खिंचती हैं और उनमें लचीलापन आता है। इससे रीढ़ सीधी और मजबूत बनती है। मजबूत रीढ़ का सीधा असर शरीर के बाकी अंगों पर भी पड़ता है। मानसिक तनाव भी कई बीमारियों की जड़ होता है। जब शरीर में दर्द या कोई अंदरूनी समस्या होती है, तो मन भी बेचैन रहता है। सर्पासन करते समय गहरी सांस ली जाती है, जिससे फेफड़े अच्छे से काम करते हैं और दिमाग तक ज्यादा ऑक्सीजन पहुंचती है। इससे मन शांत होता है और तनाव कम होने लगता है। सर्पासन त्वचा और चेहरे के लिए भी लाभकारी माना जाता है। जब शरीर में रक्त संचार सही होता है, तो उसका असर चेहरे पर भी दिखता है। चेहरे पर प्राकृतिक चमक आती है और शरीर में ताजगी महसूस होती है। यही नहीं, यह आसन पाचन तंत्र को भी सक्रिय करता है, जिससे पेट साफ रहता है और शरीर में गंदगी जमा नहीं हो पाती। सर्पासन करने की विधि भी बहुत सरल है। पेट के बल लेटकर हथेलियों को छाती के पास रखें, फिर धीरे–धीरे सांस लेते हुए शरीर को ऊपर उठाएं। सिर को पीछे की ओर ले जाकर ऊपर देखें और कुछ देर इसी स्थिति में रहें। फिर आराम से वापस मुद्रा में आ जाएं। इसे रोजाना कुछ मिनट करने से शरीर में बड़ा बदलाव महसूस किया जा सकता है।